सविता

अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय , केरल, तिरुवनंतपुरम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्ध-वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका- 44 वां अंक

<u>पत्रिका परिवार</u>

संरक्षक

सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री मोहम्मद डानिष के, उप महालेखाकार

सदस्य

सुश्री आशा जे आर, सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री आकांशा गहलोत, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री शिवानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

*पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। सम्पादन मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा गृह-पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। शासकीय कार्यों में राजभाषा का अनुप्रयोग केवल संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति नहीं है, अपितु यह जन-सामान्य के साथ आत्मीय जुड़ाव स्थापित करने का एक सशक्त सेतु भी है।

वास्तव में, किसी भी संगठन की गृह-पत्रिका मात्र एक संकलन नहीं होती, बल्कि वह वहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक ऊर्जा, साहित्यिक अभिरुचि और विभागीय प्रगति का जीवंत परिचायक होती है। हमारे कार्यालय ने राजभाषा कार्यान्वयन को पदीय दायित्व के साथ-साथ एक सहज संस्कृति और उत्सव के रूप में अपनाया है, जो हमारी कार्य-संस्कृति की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दैनिक प्रशासनिक व्यस्तताओं के मध्य समय निकालकर हमारे कार्मिकों ने जिस प्रकार अपनी कलात्मक, वैचारिक और साहित्यिक प्रतिभा को इस पत्रिका के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, वह अत्यंत सराहनीय है। इसमें संकलित विविध रचनाएँ पाठकों के लिए निश्चित ही ज्ञानवर्धक और उत्प्रेरक सिद्ध होंगी।

इस ज्ञानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल की निष्ठा तथा अपने विचार साझा करने वाले सभी लेखक-कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई देती हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक सुविज्ञ पाठकों द्वारा बेहद पसंद किया जाएगा और कार्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करेगा।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन और इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

प्रीति अब्राहम
महालेखाकार

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उसके प्रभावी प्रयोग को भी प्रोत्साहित करती है।

राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग प्रशासनिक कार्यों, संवाद एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार की पत्रिकाएँ हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने, भाषा के प्रति आत्मीयता विकसित करने तथा कर्मचारियों में सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक सामग्री से परिपूर्ण होगा तथा पाठकों को हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति और अधिक प्रेरित करेगा।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल, लेखकों तथा इसके प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं सफलता की कामना करता हूँ।

नसीफ

नसीफ अब्दुल खादर
वरि. उप महालेखाकार/ए एम जी II

सन्देश

अत्यंत हर्ष एव संतोष के साथ हम आपकी सेवा में हमारी पत्रिका का यह नवीन अंक प्रस्तुत कर रहे है। प्रत्येक संस्करण की तरह इस अंक का उदेश्य भी केवल सूचनाएं प्रदान करना नहीं, बल्कि विचारो को समृद्ध करना, ज्ञान का विस्तार करना तथा सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना है।

आज के तीव्र गति से बदलते समय में सुचना, जागरूकता एवं रचनात्मक सोच का महत्व पहले से कही अधिक बढ़ गया है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख, तथा विविध रचनाएँ पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उन्हें उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रेरित करेंगी। ऐसी पहल संस्थान में संवाद, सहयोग और निरंतर सीखने की संस्कृति को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

यह पत्रिका अनेक व्यक्तियों के सहयोग, समर्पण एव परिश्रम का परिणाम है। हम मानते है की किसी भी प्रकाशन की वास्तविक सफलता उसके पाठकों की सहभागिता एवं प्रतिक्रिया में निहित होती है। मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल तथा सभी योगदानकर्ताओं को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार उच्च गुणवत्ता, प्रासंगिकता और उपयोगिता के साथ प्रकाशित होती रहे तथा संस्थान की गरिमा और उद्देश्यों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहे।

सभी पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

एस सुरेश कुमार

उप महालेखाकार/ए एम जी III

संदेश

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय परिवार की विविध प्रतिभाओं, विचारों और अनुभवों की एक सजीव अभिव्यक्ति है। प्रत्येक अंक हमें यह अवसर देता है कि हम अपनी व्यावसायिक पहचान से आगे बढ़कर एक-दूसरे के व्यक्तित्व, संवेदनाओं और सृजनशीलता को भी जान सकें।

हमारा कार्यालय देश के विभिन्न राज्यों से आए अधिकारियों और कर्मचारियों का एक सुंदर संगम है। यहाँ अनेक भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ साथ-साथ चलती हैं। ऐसे परिवेश में राजभाषा हिंदी केवल कार्यालयी कार्यों का माध्यम नहीं रह जाती, बल्कि वह संवाद, सहभागिता और आत्मीयता का एक सशक्त सेतु बन जाती है। जब हम एक-दूसरे की भाषा और अभिव्यक्ति को अपनाते हैं, तो केवल शब्दों का ही नहीं, बल्कि विचारों और भावनाओं का भी आदान-प्रदान होता है।

इस अंक में संकलित प्रत्येक लेख अपने लेखक के अनुभव, चिंतन और दृष्टिकोण की मौलिक अभिव्यक्ति है। मैं उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध बनाया है। साथ ही, संपादक मंडल के समर्पण, परिश्रम और सृजनात्मक दृष्टि के लिए उन्हें विशेष बधाई देती हूँ, जिनके प्रयासों से 'सविता' का यह अंक साकार हो सका है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका केवल पढ़ी ही नहीं जाएगी, बल्कि पाठकों को सोचने, अनुभव बाँटने और अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को नई दिशा देने के लिए भी प्रेरित करेगी। आइए, हम सभी मिलकर राजभाषा के प्रयोग को केवल अपने दायित्व का हिस्सा न मानें, बल्कि उसे पारस्परिक संवाद, राष्ट्रीय एकता और मानवीय जुड़ाव का एक सहज माध्यम बनाएं। यही 'सविता' की सबसे बड़ी सार्थकता होगी।

सान्द्रा सतीश

उप महेलखाकार / ए एम जी I

प्रिय पाठकों,

हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का यह प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारे कार्यालय की निरंतरता और प्रतिबद्धता का परिचायक है। यह संस्करण कार्यालय की भाषाई और रचनात्मक प्रगति को दर्शाता है।

शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह कार्यों में पारदर्शिता लाने और जन-सामान्य से जुड़ने का प्रभावी माध्यम भी है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालयी परिवेश में हिंदी के प्रयोग के लिए एक सहज और सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है।

इस अंक को उपयोगी बनाने में कार्यालय के उन सभी कार्मिकों का महत्वपूर्ण योगदान है, जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर विभिन्न विषयों पर अपनी रचनाएँ साझा की हैं। इसमें संकलित लेख, कविताएँ और संस्मरण पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे। सभी रचनाकारों का यह प्रयास सराहनीय है।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादन समिति के प्रयासों की सराहना करता हूँ। यह पत्रिका एक सामूहिक समन्वय का परिणाम है। पाठकों से अनुरोध है कि वे इस अंक को पढ़ें और अपने बहुमूल्य सुझाव साझा करें, ताकि भविष्य के अंकों में गुणात्मक सुधार किया जा सके।

मोहम्मद डानिष के
उप महालेखाकार/प्रशा.

अनुक्रमणिका

1	भाषा की आत्मा : शब्दों से परे (लेख)	सुश्री सान्द्रा सतीश, उप महालेखाकार
2	हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025	
3	चुनाव (कविता)	श्री अखिल पी के,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4	2025 की रिपोर्ट संख्या 10 - जल जीवन मिशन पर निष्पादन लेखापरीक्षा : कार्यकारी सारांश	
5	फुटबॉल का महाकुंभ (कविता)	श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
6	सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग : लाभ और सावधानियाँ(लेख)	सुश्री हसीना पी पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7	2025 की रिपोर्ट संख्या 11 - मार्च 2024 तक की समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट	
8	भारतीय भाषाओं से जुड़ें अनोखे तथ्य	
9	इंडियन कॉफ़ी हाउस का इतिहास (लेख)	श्री दीपक के. वी., सहायक पर्यवेक्षक
10	वायु की गुणवत्ता(लेख)	सुश्री गौरीआनंदन एस एस पुत्री संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11	बगिया का सुख (कहानी)	सुश्री आकांशा गहलोत, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
12	ओलिम्पिक मेडल (कहानी)	सुश्री संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
13	पहिया: एक छोटा सा घेरा जिसने दुनिया बदल दी	सुश्री देविका के. दीपक, सुपुत्री दीपक के. वी.,सहायक पर्यवेक्षक
14	स्मृतियों के झरोखे से(कहानी)	सुश्री शिवानी, सुश्री आकांशा गहलोत, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
15	स्वस्थ खान-पान की आदतें (लेख)	श्रीमती अंबिका दीपक, पत्नी दीपक के.वी., सहायक पर्यवेक्षक
16	वर्कला की लहरें और जिंदगी का फलसफा (कहानी)	श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
17	चिड़ियाघर (लेख)	श्री आदिशंकर एस एस पुत्र संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
18	चेक पॉइंट्स	
19	चित्र	श्री नरेन्द्रन एस पुत्र सुश्री संजा सी चंद्रन,वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुश्री सान्द्रा सतीश
उप महालेखाकार

भाषा की आत्मा : शब्दों से परे

यदि शब्द केवल संवाद का माध्यम होते, तो एक कविता हमें रुलाती क्यों? यदि भाषा केवल सूचना देने का साधन होती, तो माँ की लोरी किसी भी अनुवाद में वैसी क्यों नहीं लगती? और यदि भाषाएँ केवल ध्वनियाँ होतीं, तो किसी भाषा के मौन हो जाने पर ऐसा क्यों लगता है कि मानो संसार की कोई अनमोल धरोहर खो गई हो?

मनुष्य ने बोलना कब सीखा, इसका उत्तर इतिहास दे सकता है। पर उसने महसूस करना कब सीखा, इसका उत्तर शायद किसी के पास नहीं। संभव है कि भावनाएँ शब्दों से कहीं पहले जन्मी हों। एक नवजात शिशु अपनी माँ की गोद में किसी भाषा को नहीं समझता, फिर भी उसके स्पर्श में छिपा स्नेह पहचान लेता है। वह शब्द नहीं सुनता, विश्वास सुनता है। शायद यहीं से भाषा की यात्रा आरम्भ होती है। हम अक्सर भाषा को शब्दों का संग्रह समझ लेते हैं। पर भाषा केवल शब्द नहीं है। शब्द तो उसके वस्त्र हैं; उसकी आत्मा कहीं अधिक गहरी है। वह स्मृतियों में बसती है, अनुभवों में साँस लेती है और पीढ़ियों के बीच एक अदृश्य पुल बनकर बहती रहती है। शब्द बदलते रहते हैं, उच्चारण बदल जाते हैं, लिपियाँ बदल जाती हैं, पर भाषा की आत्मा समय के साथ भी जीवित रहती है।

हमारे जीवन की सबसे पुरानी स्मृतियाँ किसी चित्र में नहीं, किसी भाषा में सुरक्षित रहती हैं। बचपन में पुकारा गया अपना नाम, पहली बार सुनी गई कहानी, किसी अपने की डाँट, किसी प्रिय का स्नेह, पहली प्रार्थना, पहली कविता...ये सब केवल घटनाएँ नहीं हैं। ये वे क्षण हैं जिन्होंने हमारे भीतर एक संसार रचा। इसलिए जब वर्षों बाद कोई परिचित शब्द अचानक कानों में पड़ता है, तो वह केवल सुनाई नहीं देता; वह हमें हमारे बीते हुए समय तक पहुँचा देता है। भाषा समय की सबसे विश्वसनीय संरक्षक है।

कहा जाता है कि संसार को देखने के लिए आँखें चाहिए। पर शायद यह आधा सत्य है। संसार को समझने के लिए भाषा भी चाहिए। हम जिस भाषा में सोचते हैं, उसी में अपने अनुभवों को अर्थ देते हैं। उसी में प्रेम व्यक्त करते हैं,

उसी में क्षमा माँगते हैं, उसी में ईश्वर को पुकारते हैं और उसी में अपने सबसे कठिन प्रश्न स्वयं से पूछते हैं। भाषा केवल विचारों को व्यक्त नहीं करती; वह उन्हें आकार भी देती है। इसी कारण कोई भी भाषा दूसरी भाषा की प्रतिछाया नहीं हो सकती। प्रत्येक भाषा अपने भीतर एक अलग आकाश समेटे रहती है। कुछ भाषाएँ प्रकृति को सूक्ष्मता से देखती हैं, कुछ संबंधों को, कुछ समय को, कुछ मौन को। जब कोई भाषा लुप्त होती है, तब केवल कुछ शब्द नहीं खोते; संसार को देखने का एक पूरा दृष्टिकोण खो जाता है। मानो किसी विशाल चित्र से एक रंग सदा के लिए मिट गया हो।

पर भाषा की सबसे अद्भुत विशेषता यह है कि वह केवल बोलने में नहीं, सुनने में भी रहती है। कभी-कभी दो मनुष्यों के बीच सबसे गहरा संवाद बिना एक भी शब्द बोले हो जाता है। किसी की आँखों में उतर आया विश्वास, किसी के मौन में छिपा दुःख, किसी मुस्कान में झलकती आशा-इन सबको समझने के लिए शब्दों से अधिक संवेदना चाहिए। शायद इसी कारण भाषा का उद्देश्य मौन को भरना नहीं, उसे अर्थ देना है।समय के साथ मनुष्य बहुत कुछ बदल देता है। वह अपना घर बदलता है, अपना शहर बदलता है, अपना परिवेश बदलता है। जीवन की यात्राएँ उसे अनेक दिशाओं में ले जाती हैं। पर एक घर ऐसा होता है जो उसके साथ चलता रहता है। वह ईंटों से नहीं बना होता, फिर भी सबसे सुरक्षित होता है। वह है...उसकी भाषा। वहीं उसकी स्मृतियाँ रहती हैं, वहीं उसके सपने आकार लेते हैं, वहीं उसके भीतर का अकेलापन स्वयं से बातें करता है। भाषा शायद मनुष्य का वह एकमात्र घर है, जिसे वह अपने भीतर लेकर चलता है।

आज का युग तकनीक का युग है। मशीनें हमारी आवाज़ पहचान लेती हैं, हमारे वाक्यों का अनुवाद कर देती हैं, कुछ ही क्षणों में संसार के किसी भी कोने तक संदेश पहुँचा देती हैं। यह एक अद्भुत उपलब्धि है। फिर भी कुछ ऐसा है जिसे कोई मशीन नहीं पकड़ सकती। वह है, शब्दों के पीछे छिपी अनुभूति। कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता यह बता सकती है कि किसी वाक्य का अर्थ क्या है, पर यह नहीं कि वह किसी हृदय को क्यों छू लेता है। किसी कविता का अनुवाद संभव है, पर उसके भीतर धड़कती अनुभूति का नहीं। शायद इसी कारण भाषा केवल अभिव्यक्ति नहीं, अस्तित्व है। वह हमें दूसरों से जोड़ती ही नहीं, स्वयं से भी मिलाती है। जब हम भीतर से टूटते हैं, तब भी हम किसी भाषा में ही स्वयं को सँभालते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तब भी किसी भाषा का सहारा लेते हैं। और जब कभी शब्द साथ छोड़ देते हैं, तब भी भाषा कहीं न कहीं हमारे मौन में जीवित रहती है।

अंततः भाषा का सबसे बड़ा चमत्कार यही है कि वह हमें केवल बोलना नहीं सिखाती, मनुष्य होना सिखाती है। वह हमें स्मृतियों से जोड़ती है, संवेदनाओं को आकार देती है, अनुभवों को अर्थ देती है और उन भावों को पीढ़ियों तक पहुँचाती है जिन्हें समय भी मिटा नहीं पाता। इसलिए भाषा को केवल पढ़िए या बोलिए मत-उसे सुनिए, महसूस कीजिए और जीइए। क्योंकि शब्द समय के साथ बदल सकते हैं, पर भाषा की आत्मा सदैव मनुष्य के भीतर एक शांत दीपक की तरह जलती रहती है.....दिखाई कम देती है, पर जीवन को प्रकाश उसी से मिलता है।

'हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025'

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) के कार्यालय में जब प्रशासनिक कार्यकुशलता और भाषाई समन्वय का मिलन होता है, तो वह एक अनूठा और प्रेरणादायी परिदृश्य पेश करता है। ऐसा ही एक शानदार समन्वय तब देखने को मिला, जब महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) और महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल के संयुक्त तत्वावधान में 'हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा समारोह 2025' का भव्य आयोजन किया गया। तिरुवनंतपुरम स्थित प्रधान कार्यालय से लेकर राज्य के विभिन्न हिस्सों में सक्रिय शाखा कार्यालयों तक, इस आयोजन ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा के रंग में सराबोर कर दिया।

एक साझा संकल्प: राजभाषा प्रतिज्ञा से शुरुआत

इस उत्सव की वैचारिक शुरुआत बेहद गरिमामयी रही। चूंकि 14 सितंबर 2025 को रविवार था, इसलिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशों का पालन करते हुए अगले ही दिन, यानी 15 सितंबर 2025 को पूर्वाह्न 11:00 बजे 'हिंदी पखवाड़ा' का शुभारंभ किया गया। कार्यालय परिसर के विभिन्न अनुभागों के साथ-साथ दूर-दराज के क्षेत्रों में तैनात क्षेत्रीय लेखापरीक्षा दलों के सदस्यों ने भी अपने प्रभारियों के नेतृत्व में पूरी निष्ठा के साथ राजभाषा प्रतिज्ञा ली।

इस प्रतिज्ञा ने सभी कर्मियों को संवैधानिक दायित्वों की याद दिलाई:

"भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से... राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।"

उत्सव का भौगोलिक विस्तार और समय-सारणी

केरल के अलग-अलग हिस्सों में स्थित कार्यालयों की कार्यशैली और सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस पूरे कार्यक्रम को बेहद व्यवस्थित ढंग से विकेंद्रीकृत किया गया था:

कार्यालय / शाखा	आयोजन का स्वरूप	निर्धारित अवधि (वर्ष 2025)
मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	हिंदी पखवाड़ा	14.09.2025 से 29.09.2025
शाखा कार्यालय, तृशूर	हिंदी पखवाड़ा	14.09.2025 से 26.09.2025
खा कार्यालय, कोळिकोड़	हिंदी सप्ताह	19.09.2025 से 26.09.2025
शाखा कार्यालय, एरणाकुलम	हिंदी सप्ताह	19.09.2025 से 26.09.2025
शाखा कार्यालय, कोट्टयम	हिंदी सप्ताह	19.09.2025 से 26.09.2025

रचनात्मकता और प्रशासनिक दक्षता की अनूठी प्रतियोगिताएं

17 सितंबर 2025 को भव्य उद्घाटन के साथ ही प्रतियोगिताओं का दौर शुरू हुआ, जो 24 सितंबर तक निरंतर चलता रहा। इन प्रतियोगिताओं को इस तरह तैयार किया गया था कि इनमें प्रशासनिक कौशल और रचनात्मक प्रतिभा दोनों को समान अवसर मिले।

उद्घाटन समारोह में उपमहालेखाकारों द्वारा द्वीप प्रज्वलन

- **प्रशासनिक एवं तकनीकी कौशल:** कार्यालयी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए 'टिप्पण एवं आलेखन', 'प्रशासनिक हिंदी' 'अंग्रेजी से हिंदी और विलोमतः अनुवाद' तथा 'श्रुतलेखन' जैसी व्यावहारिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।
- **साहित्यिक एवं रचनात्मक मंच:** कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि को निखारने के लिए निबंध लेखन, कथा रचना, कविता रचना और आशु भाषण का आयोजन हुआ।
- **कला और सांस्कृतिक रंग:** सुलेखन, हस्तलेखन और पोस्टर डिजाइनिंग के जरिए कलात्मक प्रतिभा सामने आई। वहीं, हिंदी एकल गीत (महिला व पुरुष), समूह गान, कविता पाठ और अंताक्षरी ने माहौल को पूरी तरह संगीतमय और जीवंत बना दिया। मनोरंजन और ज्ञान के सटीक मिश्रण के रूप में 'राजभाषा प्रश्नोत्तरी' का भी सफल आयोजन किया गया।

जागरूकता कार्यक्रम और गौरवमयी समापन

केवल प्रतिस्पर्धा ही नहीं, बल्कि सीखने और सिखाने के उद्देश्य से 23 सितंबर 2025 को प्रधान कार्यालय (तिरुवनंतपुरम) और शाखा कार्यालय (तृशूर) में अधिकारियों के लिए विशेष 'राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम' आयोजित किए गए।

इस पूरे उत्सव का सुखद समापन समापन सम्मेलनों के साथ हुआ, जो शाखा कार्यालयों में 26 सितंबर को और प्रधान कार्यालय में 29 सितंबर 2025 को आयोजित किए गए। इस गरिमामयी अवसर हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'सविता' का विमोचन किया गया। साथ ही, हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभाग, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं व प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए पुरस्कार और प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी ने यह साबित कर दिया कि भाषा केवल फाइलों का हिस्सा नहीं, सभी को साथ लाने का एक सशक्त माध्यम है।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागी

जागरूकता कार्यक्रम

महालेखाकारों द्वारा पत्रिका ‘सविता’ का विमोचन

अखिल पी के
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चुनाव

कितना सुन्दर शब्द हैं मगर,
हर चुनाव एक चुनौती है।
कुछ लोग लड़ते हैं मगर,
कुछ लड़ाते है।

खेलते हैं लुकाछिपी बारी-बारी से,
लड़नेवाले और लड़ानेवाले।
पिस जाते हैं इस अनोखे खेल में हर बार,
मेरे अंदर का आम इंसान।

पीढ़ियां गुज़र गई - चुनाव की कैद में,
इतिहास गवाह है।
मगर अफसोस - रह गए हम,
अपने लाचारी के शिकार - हर बार।

चुन-चुन कर बेमौत मारते हैं मुझे,
हर रोज़ मेरे अपने - बदलाव के सपने दिखाकर।
कमबख्त मैं भी - लड़ता हूं जिंदगी का चुनाव हर रोज़,
जहां जीत कभी तय नहीं थी।

कोई तो बताए मुझे,
कैसे जीयूं मैं - हारकर या हराकर!??
कैसे जिया जाए - मेरे अपने अनमोल जीवन
जो सपनों में बस जाते है हर वक्त!?

कोशिशें जारी रखते हैं
क्या पता - वक्त कब बदल जाए !?
जीत तय होगी हर हाल में तब,
हारने वाला जब बन जाए हराने वाला।

सच हैं कि हर चुनाव एक चुनौती है,
मगर अफसोस - कौन लड़ेगा मुफ्त की लड़ाई
चाहे सपने कितने भी बड़े हो,
जीत कितनी भी सुन्दर हो।

जागो मेरे अंदर के मानव
चुनाव के कैद से बाहर निकलो - क्योंकि,
सिर्फ फिल्मों में ही कहते हैं -
हारकर जीतने वाले को बाज़ीगर !!

2025 की रिपोर्ट संख्या 10 - जल जीवन मिशन पर निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट

कार्यकारी सारांश

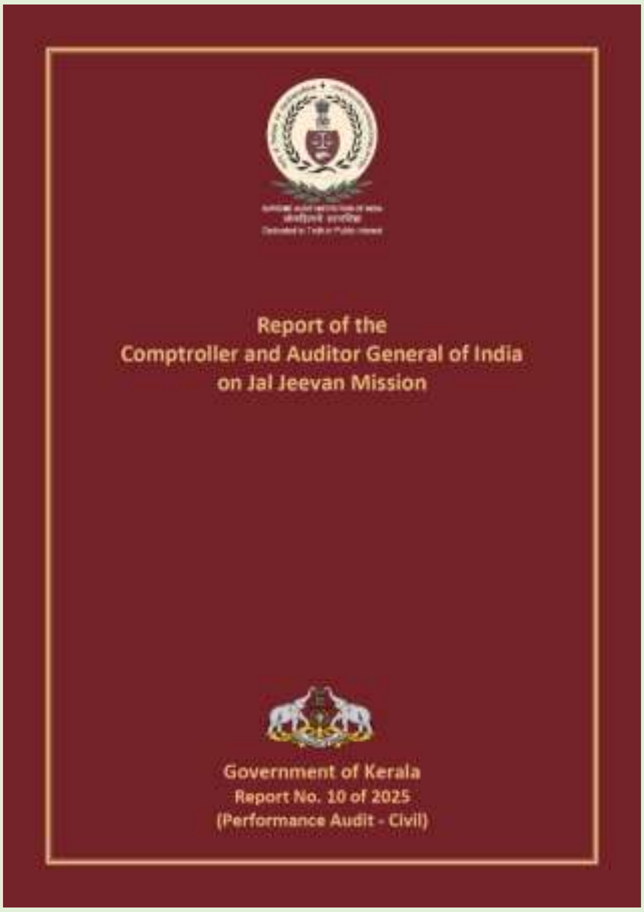

केरल को 44 नदियों और कई झीलों तथा पश्चजल अनूपों (बैकवाटर लैगून) के साथ प्रचुर जल संसाधनों की भूमि माना जाता है। केरल में प्रतिवर्ष प्रचुर मात्रा में वर्षा भी होती है और यह वार्षिक वर्षा के मामले में भारत के शीर्ष राज्यों में से एक है। केरल की ग्रामीण आबादी कुआँ जल प्रणाली पर निर्भर रहने के लिए जानी जाती है। केरल में, तीन-चौथाई आबादी को उनके अपने परिसर के भीतर पेयजल उपलब्ध है। हालाँकि, विभिन्न जिलों के लिए ये आँकड़े भिन्न थे; इडुक्की जिले में केवल 41 प्रतिशत आबादी को परिसर के भीतर ही पेयजल उपलब्ध था, जबकि कोल्लम जिले में यह 85 प्रतिशत थी। पेयजल की गुणवत्ता भी अलग-अलग जिलों में भिन्न-भिन्न पाई गई।

जब भारत सरकार ने वर्ष 2019 में जल जीवन मिशन (जेजेएम) की शुरुआत की, तो केरल सरकार ने ग्रामीण समुदाय के लिए प्रति व्यक्ति प्रति दिन 100 लीटर पेयजल के सेवा स्तर का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया। वर्ष 2019 में, नल के पानी के कनेक्शन के माध्यम से ग्रामीण परिवारों की केवल 25 प्रतिशत से कम कवरेज के साथ, राज्य ने वर्ष 2020-25 की अवधि के दौरान अपनी 100 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करने की आकांक्षा रखी थी। कुल 54.45 लाख परिवारों को ₹44,714.79 करोड़ की कुल लागत से कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करने के लिए प्रशासनिक संस्वीकृति प्रदान की गई थी।

ग्रामीण जलापूर्ति के परिदृश्य में इस हस्तक्षेप के महत्व को देखते हुए, हमने योजना, कार्यान्वयन, वित्तीय प्रबंधन और अनुवीक्षण के संदर्भ में मिशन के उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया, इसका आकलन करने के लिए यह लेखापरीक्षा की गई है । हमारे परीक्षण से केरल में योजना के क्रियान्वयन पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई।

जल जीवन मिशन को एक समुदाय-केंद्रित और समुदाय-संचालित योजना बनाने का उद्देश्य था, जिसमें ग्रामीण समुदाय जलापूर्ति प्रणालियों के नियोजन, कार्यान्वयन और प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल हों। हालाँकि, हमने पाया कि केरल सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय, केरल जल प्राधिकरण, जल जीवन मिशन को आगे बढ़ाने वाली मुख्य शक्ति बना रहा। केरल जल प्राधिकरण ने धरातलीय स्तर पर महसूस की गई आवश्यकताओं का कोई वास्तविक आकलन किए बिना, स्वायत्त रूप से तैयार की गई विस्तृत परियोजना रिपोर्टों से इनपुट लेकर अपने प्रभाग/उप-प्रभाग के माध्यम से योजना को लागू किया।

यद्यपि योजना के मार्गदर्शक सिद्धांतों में स्वामित्व की भावना पैदा करने और ग्रामीण वंचित समुदायों के सशक्तिकरण के साधन के रूप में ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों और ग्राम कार्य योजनाओं का प्रावधान किया गया था, परंतु यह पाया गया कि लेखापरीक्षा के लिए जांचे गए 21 ग्राम पंचायतों में से केवल चार में ही ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों का गठन किया गया था और ग्राम कार्य योजनाएं परिकल्पना के अनुसार तैयार नहीं की गई थीं। राज्य कार्य योजना, जिला कार्य योजनाओं से तैयार नहीं हुई थी और स्रोत स्थिरता उपायों तथा धूसर जल (ग्रे-वाटर) उपचार के लिए कोई व्यापक कार्य योजना तैयार नहीं की गई थी। जलापूर्ति प्रणालियों की स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए राज्य ने कोई संचालन और रखरखाव नीति तैयार नहीं की थी। इसके अतिरिक्त, भारत के संविधान के 73वें संशोधन के अनुरूप पंचायती राज संस्थाओं को पेयजल प्रबंधन के औपचारिक हस्तांतरण को सक्षम करने वाली पंचायती राज अधिनियम के तहत एक उपयुक्त अधिसूचना राज्य में जारी की जानी अभी शेष थी। हमने देखा कि जांचे गए जिलों में, जल जीवन मिशन के तहत परियोजनाओं के निष्पादन के लिए श्रम और वित्तीय संसाधनों के उपयोग को सुगम बनाने हेतु महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, वित्त आयोग (बद्ध अनुदान), एकीकृत जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रम , स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) आदि जैसे अन्य कार्यक्रमों/योजनाओं के साथ कोई अभिसरण योजना तैयार नहीं की गई थी।

परिणामस्वरूप, यद्यपि हमने कार्यात्मक नल कनेक्शन प्रदान करने में महत्वपूर्ण प्रगति देखी, लेकिन हमने यह भी पाया कि 2,13,991 कनेक्शन प्रदान किए जाने के एक माह के भीतर ही काट दिए गए, जो योजना में लाभार्थियों की अरुचि को दर्शाता है। यह इस तथ्य से भी परिलक्षित होता है कि जांच की गई केवल चार ग्राम पंचायतों ने ही सामुदायिक अंशदान एकत्र किया था, जो ₹131.40 लाख था।

हमने यह भी देखा कि 100 प्रतिशत कवरेज प्राप्त करने के अपने प्रयास में, सरकार ने आधारभूत सर्वेक्षणों और प्राथमिकताओं के माध्यम से आवश्यकताओं का वास्तविक आकलन नहीं किया, जिसके कारण जल गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्रों, आकांक्षी जिलों, सांसद आदर्श ग्राम योजना के गांवों आदि जैसे जलापूर्ति बुनियादी ढांचे की वास्तव में आवश्यकता वाले क्षेत्रों को कवर करने के उद्देश्य से किए जाने वाले विशिष्ट हस्तक्षेप फलीभूत नहीं हो सके। हम केरल जल प्राधिकरण / जांच की गई ग्राम पंचायतों द्वारा पर्याप्त संख्या में सामुदायिक जल शोधन संयंत्रों को क्रियाशील करके जल गुणवत्ता प्रभावित बस्तियों में स्वास्थ्य संबंधी खतरों को दूर करने के लिए की गई कोई प्रभावी उपचारात्मक कार्रवाई नहीं मिली । लेखापरीक्षा के लिए चुनी गई तीन अनुसूचित जनजाति बहुल ग्राम पंचायतों - अगाली, पुदुर और शोलायुर में एक भी कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान नहीं किया गया था।

इस योजना को अत्यंत देरी का भी सामना करना पड़ा, जिसमें पांच वर्ष की अवधि में कुल 5,318 कार्यों में से केवल 51 प्रतिशत कार्य ही पूरे हो सके। 17 प्रतिशत कार्य तो शुरू भी नहीं हो सके। हमने देखा कि इन विलंभों का मुख्य कारण सड़क काटने की संस्वीकृति से संबंधित अनुमतियां प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयाँ थीं। सड़क काटने की संस्वीकृति प्राप्त करने के लिए विभिन्न संस्थाओं को भेजे गए जल जीवन मिशन कार्यों से संबंधित कुल 7,458 आवेदनों में से आधे से अधिक पर निर्णय अभी भी लंबित थे। अनुमोदक एजेंसियों से संस्वीकृति प्राप्त करने में देरी की औसत अवधि 60 से 390 दिनों के बीच थी।

इन प्रशासनिक विलंभों के अतिरिक्त, हमने यह भी देखा कि राज्य के आनुपातिक हिस्से जारी करने में देरी और इसके परिणामस्वरूप भारत सरकार की निधियों के कम जारी होने से कार्यान्वयन में देरी काफी बढ़ गई। यद्यपि जल जीवन मिशन के लिए राज्य की निधियों की अनुमानित आवश्यकता संपूर्ण अनुदान पर कुल परिव्यय से छह गुना से अधिक

थी, फिर भी सरकार ने जल जीवन मिशन योजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन जुटाने के स्रोतों की पहचान नहीं की, जबकि यह भारत सरकार के साथ 50:50 के साझाकरण के आधार पर थी। सामुदायिक अंशदान और स्थानीय निकाय अंशदान के रूप में भी पर्याप्त राशि प्राप्त नहीं हो रही थी । नकदी की कमी का योजना के कार्यान्वयन पर असर पड़ा, राज्य में ठेकेदारों को भुगतान के लिए कुल ₹3,578.47 करोड़ के बिल लंबित थे, जिससे वे नई परियोजनाएं लेने में संकोच कर रहे थे। ठेकेदारों के बीच रुचि की कमी स्पष्ट थी, क्योंकि ₹23,625.72 करोड़ मूल्य के कार्य पैकेज गैर-आवंटित पड़े रहे, जिससे देरी और बढ़ गई।

हमने पानी की गुणवत्ता की निगरानी और योजना की समग्र प्रगति को ट्रैक करने के तौर-तरीकों में भी कई विसंगतियाँ देखीं। सभी जल स्रोतों को कवर करते हुए नियमित और व्यवस्थित जल गुणवत्ता निगरानी नहीं की गई और जिन नमूनों के परिणाम सकारात्मक (दूषित) पाए गए, उन्हें उपचारात्मक कार्रवाई के लिए समुदाय के साथ साझा नहीं किया गया। ग्राम-आंतरिक बुनियादी ढांचे के तहत निष्पादित सभी इंजीनियरिंग कार्यों का तृतीय-पक्ष निरीक्षण, जो कि किया जाना अनिवार्य था, भुगतान जारी करने से पहले आयोजित नहीं किया गया। हमने यह भी पाया कि कार्यान्वयन सहायता एजेंसियां, जिन्हें ग्राम-आंतरिक जलापूर्ति बुनियादी ढांचे की योजना, डिजाइन और कार्यान्वयन के लिए समुदायों को सक्रिय और संलग्न करने में सहायता करनी थी, उन्हें इस प्रक्रिया में तब लाया गया जब पूरी योजना और सक्रियता का चरण पहले ही समाप्त हो चुका था, जिससे इन एजेंसियों की भूमिका और प्रभाव सीमित हो गया। इंटरनेट ऑफ थिंग्स प्लेटफॉर्म वर्तमान में स्थापित नहीं था और एकीकृत प्रबंधन सूचना प्रणाली के संबंध में डेटा गवर्नेंस और सत्यापन के तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता थी।

कुल मिलाकर, केरल में जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन ने ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन नेटवर्क के विस्तार में काफी प्रगति की, लेकिन राज्य ग्रामीण परिवारों के एफएचटीसी के लक्षित 100 प्रतिशत कवरेज के मुकाबले मार्च 2024 तक केवल 52.46 प्रतिशत ही प्राप्त कर सका। इसके अतिरिक्त, जलापूर्ति प्रणालियों की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने में समुदायों की जिम्मेदार और उत्तरदायी भागीदारी के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्यान्वयन कम रहा। आधारभूत सर्वेक्षणों और प्राथमिकतीकरण के अभाव के कारण संवेदनशील क्षेत्रों का कवरेज कम रहा, जिनमें गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्र और जनजातीय बस्तियां शामिल हैं। कार्यान्वयन के लिए आवश्यक अनुमानित धनराशि के मुकाबले पर्याप्त राशि जुटाने के स्रोतों की पहचान नहीं की गई थी। समुदायों और ग्राम पंचायतों की सीमित भूमिका तथा रेल/सड़क काटने की संस्वीकृति जारी करने में प्रशासनिक देरी के साथ-साथ धन की कमी ने कार्यों के समय पर निष्पादन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। जल गुणवत्ता की निगरानी और तृतीय-पक्ष निरीक्षण में विसंगतियों ने भी योजना के समग्र निष्पादन को प्रभावित किया।

इस परीक्षण के आधार पर निम्नलिखित संस्तुतियाँ की जाती हैं:

इस प्रतिवेदन में प्रस्तुत संस्तुतियाँ

- **सरकार द्वारा समुदाय के स्वामित्व और भागीदारी को सुगम बनाने के लिए, भारत के संविधान के 73वें संशोधन के अनुरूप पंचायती राज संस्थाओं को पेयजल प्रबंधन के हस्तांतरण की सुविधा हेतु केरल पंचायती राज अधिनियम के तहत अधिसूचना जारी करने पर विचार किया जाए।**
- **सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के तहत स्रोत स्थिरता और धूसर जल (ग्रे-वाटर) प्रबंधन के उपायों सहित एक व्यापक कार्य योजना तैयार की जाए ।**

- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि जलापूर्ति प्रणालियों की स्थिरता और निरंतरता को बनाए रखने के लिए जल जीवन मिशन के तहत कार्यान्वित परियोजनाओं के लिए एक व्यापक संचालन और रखरखाव नीति तैयार की जाए।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि बड़ी, लाभार्थी-उन्मुख परियोजनाओं के मामले में परियोजना की शुरुआत में ही आधारभूत सर्वेक्षण किए जाएं, ताकि किसी गाँव में सुरक्षित पेयजल तक पहुँच वाले परिवारों के प्रतिशत का आकलन किया जा सके।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि राज्य की सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों का गठन किया जाए और वे जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन के लिए एक विकेंद्रीकृत और सहभागी संस्थागत ढांचे के हिस्से के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करें।
- सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के तहत आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन जुटाने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा (रोड मैप) तैयार की जाए ।
- सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के लिए निधियों के राज्य के हिस्से को समय पर जारी करने के लिए कार्रवाई शुरू की जाए और समुदाय तथा स्थानीय निकायों से अंशदान एकत्र करने के लिए कदम उठाए जाए, जिससे योजना के कार्यान्वयन में स्वामित्व की भावना और बढ़ी हुई भागीदारी को बढ़ावा मिले।
- सरकार द्वारा रेल/सड़क काटने की समय पर मंजूरी के लिए विभागों और ग्राम पंचायतों के साथ समन्वय पर जल जीवन मिशन की कार्यान्वयन एजेंसियों के लिए एक प्रोटोकॉल निर्धारित किया जाए।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि जल गुणवत्ता प्रभावित बस्तियों में सामुदायिक जल शोधन संयंत्र) स्थापित किए जाएं और उन्हें क्रियाशील बनाया जाए, ताकि परिवारों की पीने और खाना पकाने की जरूरतों को पूरा करने के लिए पीने योग्य पानी की निर्बाध आपूर्ति प्रदान की जा सके।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि केरल जल प्राधिकरण गुणवत्ता नियंत्रण प्रभागों और राज्य/जिला/उप-मण्डलीय प्रयोगशालाओं के माध्यम से नियमित आधार पर जल गुणवत्ता निगरानी और सतर्कता कार्यक्रम आयोजित करे तथा परीक्षण के परिणामों को समय पर हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को सूचित करे।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि केरल जल प्राधिकरण एकीकृत प्रबंधन सूचना प्रणाली के संबंध में डेटा गवर्नेंस और सत्यापन के तंत्र को मजबूत करने के लिए 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' आधारित प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाते हुए एक उपयुक्त माप और निगरानी प्रणाली लागू करे।

श्री अविनाश नाथ
लेखापरीक्षक

फुटबॉल का महाकुंभ

हरे मैदान पर सजती है महफिल,
हर दिल की धड़कन, हर धड़कन में हलचल।
चार सालों का लंबा वो इंतजार,
आ गया देखो फुटबॉल का त्योहार!

शंखनाद होता है जब सीटी का,
जोश जागता है हर एक टोली का।
गेंद के पीछे भागती है दुनिया सारी,
जीतने को जंग, हर टीम है भारी।

दिग्गजों की हुंकार

मैदान पर जब कदम रखता है वो नाम,
क्रिस्टियानो रोनाल्डो, जिसका हर एक्शन कमाल।
उम्र को जिसने बस एक आंकड़ा बनाया,
'सियुयु....' की गूंज से हर स्टेडियम हिलाया।
उसकी रफ्तार, वो हवा में उछलना,
मुश्किल है उसके तीखे तीरों से बचना।

तभी गूंजता है एक और नाम,
लियोनेल मेसी, जादूगर सरेआम।
पैरों में जिसके गेंद ऐसे चिपक जाए,
जैसे कोई कसीदा हवा में बुन जाए।
कंधों पर जिसके पूरे देश का था भार,
जीत कर कप उसने रच दिया इतिहास इस बार।

नई पीढ़ी का आगाज़

पर वक्त बदलता है, नए सितारे आते हैं,
मैदान पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं।
किलियन एम्बापे की वो बिजली सी चाल,
डिफेंडर्स के दिलों में जो ला दे भूचाल।

फाइनल में हैट्रिक मार जो इतिहास बनाता है,
फ्रांस का वो शेर, हर दिल पर छा जाता है।

और उधर खड़ा है एक गोल मशीन,
अर्लिंग हालैंड, जिसका खेल है हसीन।

नॉर्वे का वो दैत्य, गोल पर गोल दागता,

बॉक्स के अंदर उससे हर कोई भागता।

ताकत और सूझबूझ का वो बेजोड़ मेल है,

गोलपोस्ट के सामने उसका बस खेल है।

जुनून और जज्बा

नेमार के वो ड्रिबल्स, साका की वो दौड़,

खिलाड़ियों के बीच मची है ये होड़।

कोई रोता है हार कर, कोई मनाता है जश्न,

फुटबॉल ही है दुनिया का सबसे हसीन प्रश्न।

डिफेंस की दीवारें, कीपरों के वो हाथ,

जीतने की खातिर, दिन बन जाती है रात।

पेनल्टी का वो प्रेशर, एक्स्ट्रा टाइम का रोमांच,

दिल थाम कर बैठती है दुनिया, आंच पर आंच।

विदाई की बेला

कप तो उठाएगा कोई एक ही सिकंदर,

पर यादें रह जाती हैं हर दिल के अंदर।

रोनाल्डो के वो आंसू, मेसी की वो मुस्कान,

एम्बापे का वो गुस्सा, हालैंड की वो उड़ान।

यह सिर्फ खेल नहीं, यह तो एक जज्बात है,

फुटबॉल का वर्ल्ड कप, खुदा की सौगात है।

जीत हार से परे, यह दिलों को मिलाता है,

इंसान को इंसान से जीना सिखाता है।

सजता रहेगा यह मेला, आते रहेंगे साल,

फुटबॉल के मैदान पर, होता रहेगा धमाल!

सुश्री हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग : लाभ और सावधानियाँ

आज के समय में लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करता है। पहले इनका प्रयोग केवल विशेष अवसरों तक सीमित था, लेकिन अब यह दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। साबुन, फेस वॉश, क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक, काजल, शैम्पू, हेयर डाई और परफ्यूम जैसे उत्पाद लगभग हर घर में मिल जाते हैं। सही जानकारी के साथ इनका उपयोग लाभदायक हो सकता है, जबकि बिना सोचे-समझे किया गया प्रयोग नुकसान भी पहुँचा सकता है।

सौंदर्य प्रसाधन क्या हैं?

वे सभी उत्पाद, जो शरीर, त्वचा, बालों या चेहरे की सफाई, देखभाल या सुंदरता बढ़ाने के लिए बनाए जाते हैं, सौंदर्य प्रसाधन कहलाते हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति को साफ-सुथरा और आकर्षक दिखाना होता है।

सौंदर्य प्रसाधनों के लाभ

- आत्मविश्वास बढ़ता है-जब व्यक्ति स्वयं को साफ और सुसज्जित महसूस करता है, तो उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसका सकारात्मक प्रभाव उसके व्यवहार और कार्य पर दिखाई देता है।
- त्वचा और बालों की देखभाल-अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद त्वचा को साफ रखने, नमी बनाए रखने और बालों की उचित देखभाल में सहायता करते हैं।
- पेशेवर जीवन में उपयोगी-कार्यालय, बैठक या सामाजिक कार्यक्रमों में सलीके से तैयार होना अच्छा प्रभाव छोड़ता है। सीमित और संतुलित उपयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखार सकता है।
- धूप और धूल से सुरक्षा-कुछ क्रीम और लोशन त्वचा को तेज धूप तथा प्रदूषण के प्रभाव से बचाने में भी मदद करते हैं।

अधिक उपयोग के दुष्प्रभाव

- एलर्जी की समस्या-कुछ लोगों की त्वचा संवेदनशील होती है। ऐसे लोगों को किसी उत्पाद से खुजली, लालपन या जलन हो सकती है।
- त्वचा को नुकसान-लगातार या आवश्यकता से अधिक मेकअप करने से त्वचा के प्राकृतिक गुण प्रभावित हो सकते हैं। कई बार मुहाँसे और दाग भी हो जाते हैं।
- बालों पर प्रभाव-बार-बार हेयर डाई या रासायनिक उत्पादों का उपयोग करने से बाल कमजोर होकर टूटने लगते हैं।
- अनावश्यक खर्च-महंगे प्रसाधनों का लगातार उपयोग परिवार के बजट पर अतिरिक्त बोझ डाल सकता है।
- नकली उत्पादों का खतरा-बाजार में कई नकली या घटिया गुणवत्ता वाले उत्पाद भी मिलते हैं। इनके उपयोग से त्वचा और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

सुरक्षित उपयोग के लिए कुछ सरल सुझाव:

हमेशा विश्वसनीय कंपनी का उत्पाद चुनें।खरीदने से पहले निर्माण और समाप्ति तिथि अवश्य देखें। किसी नए उत्पाद को पहले त्वचा के छोटे भाग पर लगाकर जाँच करें। दूसरों के व्यक्तिगत मेकअप का उपयोग करने से बचें। रात को सोने से पहले मेकअप अच्छी तरह साफ करें। यदि किसी उत्पाद से परेशानी हो, तो उसका उपयोग तुरंत बंद कर दें और आवश्यकता होने पर चिकित्सक की सलाह लें।

सौंदर्य प्रसाधन हमारे जीवन का एक सामान्य हिस्सा बन चुके हैं। इनका सही और सीमित उपयोग लाभदायक हो सकता है, लेकिन केवल सुंदर दिखने की चाह में इनका अधिक प्रयोग करना उचित नहीं है। असली सुंदरता स्वस्थ शरीर, स्वच्छता, संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद और अच्छे व्यवहार से आती है। यदि हम समझदारी से सही उत्पाद चुनें और उनका संतुलित उपयोग करें, तो हम सुंदरता के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य की भी रक्षा कर सकते हैं।

****

चित्रकार : सुश्री अंजली पी के पुत्री श्री अखिल पी के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

2025 की रिपोर्ट संख्या 11 - मार्च 2024 तक की समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट

विहंगम दृष्टि

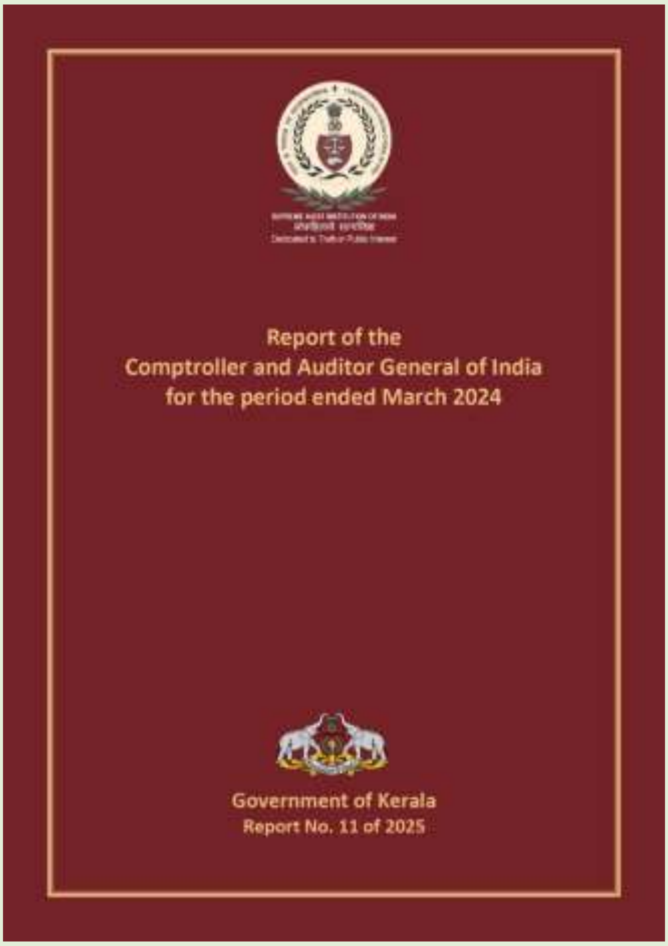

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के इस प्रतिवेदन में ₹1394.64 करोड़ से संबद्ध एक निष्पादन लेखापरीक्षा पैराग्राफ, एक विषय-विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ तथा संहिता के प्रावधानों का अनुपालन न करने, पर्यवेक्षी नियंत्रण के अभाव, सहायता/राजस्व की हानि, भवनों पर अपव्यय, अनुचित लाभ प्रदान करने आदि के मामलों सहित पाँच अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ शामिल हैं। मुख्य लेखापरीक्षा निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं।

निष्पादन लेखापरीक्षा

कालीकट विश्वविद्यालय का कार्यकरण

वर्ष 1968 में केरल के दूसरे विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित कालीकट विश्वविद्यालय की निष्पादन लेखापरीक्षा से महत्वपूर्ण प्रशासनिक, अकादमिक और वित्तीय विसंगतियाँ उजागर हुईं। इसकी रणनीतिक योजना को सिंडिकेट का अनुमोदन और समय-सीमा प्राप्त नहीं थी तथा कॉलेज विकास परिषद (सीडीसी) एवं केंद्रीकृत प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) जैसी प्रमुख गुणवत्ता आश्वासन प्रणालियाँ स्थापित नहीं थीं। सीडीसी केवल विश्वविद्यालय की एक शाखा के रूप में कार्य कर रही थी, जिसमें राज्य सरकार और संबद्ध कॉलेजों के प्राचार्यों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं था। 45 श्रेणियों के पाठ्यक्रमों में से 24 के पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के मानदंडों के अनुसार संशोधित नहीं किए गए थे। चूँकि परिनियम के अनुमोदित संशोधन को अभी लागू किया जाना शेष था, इसलिए उद्योगपतियों, उद्यमियों और छात्रों जैसे हितधारकों को 119 अध्ययन मंडलों में से किसी में भी शामिल नहीं किया गया था। राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) रैंकिंग में कालीकट विश्वविद्यालय वर्ष 2019 में 64वें स्थान पर था और वर्ष 2020 में अपनी स्थिति में सुधार करते हुए 54वें स्थान पर पहुँच गया। इसके बाद रैंकिंग में निरंतर गिरावट आई और वर्ष 2024 में विश्वविद्यालय 89वें स्थान पर रहा। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2020-21 में संचालित दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को यूजीसी की मान्यता प्राप्त नहीं थी, जिससे 32,651 छात्र प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त, पीएच.डी. प्रवेशों में यूजीसी मानदंडों का अनुपालन न करना और कमजोर अनुसंधान परिणाम देखे गए, जहाँ पर्याप्त वित्त पोषण के बावजूद 145 शोधार्थियों में से 41 शोधार्थियों ने अपना शोध-प्रबंध जमा नहीं किया था।

विश्वविद्यालय स्तर पर वार्षिक लेखे तैयार करने में चार से पांच महीने और केरल राज्य लेखापरीक्षा विभाग (केएसएडी) को लेखे सौंपने में सात से आठ महीने का विलंब देखा गया। केएसएडी द्वारा लेखापरीक्षा आयोजित करने में भी 10 से 19 महीने का विलंब हुआ। वित्तीय प्रबंधन में त्रुटियाँ केंद्रीय सहायता की हानि से स्पष्ट थीं। 47 वर्ष बीत जाने के बाद भी एक आत्मनिर्भर पेंशन कोष का सृजन नहीं किया गया था और वर्ष 1975-76 से 2023-24 की अवधि के दौरान अधिकारियों द्वारा आहरित ₹6.79 करोड़ मूल्य की अग्रिम राशि असमायोजित रही। मानव संसाधन प्रबंधन में अनियमितताओं के अंतर्गत अनुमेय सीमा से अधिक अतिथि संकाय की नियुक्ति और विश्वविद्यालय के विभागों, संबद्ध कॉलेजों तथा शिक्षक शिक्षा केंद्रों में अनुबंध/घंटे के आधार पर अपेक्षित योग्यता के बिना शिक्षकों की नियुक्ति शामिल थी। यूजीसी के मानदंडों का पालन किए बिना अभ्यर्थियों को पदोन्नति देने और सरकार द्वारा समाप्त किए जा चुके पदों पर पदोन्नति दिए जाने के मामले भी संज्ञान में आए। परीक्षा प्रक्रियाओं में मूल्यांकन में विसंगतियां, परीक्षा परिणामों को अंतिम रूप न दिया जाना, पात्र अनुग्रह अंकों का न दिया जाना, अत्यधिक अनुग्रह अंक दिया जाना तथा परीक्षाएं आयोजित करने और परीक्षा परिणाम घोषित करने में विलंब जैसी कमियां पाई गईं। वर्ष 2012 से ही 105.7 सेंट भूमि को वापस लेने की सिफारिश करने वाली एक समिति की रिपोर्ट उपलब्ध होने के बावजूद, विश्वविद्यालय को अभी इस पर निर्णय लेना शेष था। चयनित विभागों में बुनियादी ढांचा सुविधाएं जैसे कक्षाएं, लिफ्ट, रैंप/रेलिंग जैसी सुगम्यता विशेषताएं अपर्याप्त रहीं। 169 भवनों में से 74 भवनों को भवन संख्या आवंटित नहीं की गई थी, जो यह दर्शाता है कि इन भवनों का निर्माण स्थानीय स्वशासन संस्थाओं (एलएसजीआई) से अनुमति प्राप्त किए बिना किया गया था। यह केरल पंचायत भवन नियमावली का उल्लंघन था और इसने इन भवनों को अनधिकृत बना दिया।

अनुशंसाएँ:

- विश्वविद्यालय द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि विश्वविद्यालय की रणनीतिक योजना को प्राप्त करने के लिए निश्चित समय-सीमा और चरण निर्धारित किए जाएं और साथ ही उपलब्धि की प्रगति की निगरानी के लिए एक प्रणाली भी हो।
- यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया जाए और किए गए संशोधनों को विश्वविद्यालय के विनियमों में समय पर शामिल करने के लिए आगामी सिंडिकेट की बैठक के समक्ष रखा जाए। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा ऐसे समावेशन के लिए एक समय-सीमा निर्धारित की जाए।
- अकादमिक मानकों को सुरक्षित रखने और छात्रों के हितों की रक्षा करने के लिए, विश्वविद्यालय द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि संचालित किए जाने वाले पाठ्यक्रम यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त हों।
- सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि विश्वविद्यालय के लेखे विधिवत तैयार किए जाएं और निर्धारित समय-सीमा के भीतर केरल राज्य लेखापरीक्षा विभाग (केएसएडी) को प्रस्तुत किए जाएं, तथा केएसएडी निर्धारित समय-सारणी के अनुसार लेखापरीक्षा पूरी करे।
- सरकार और विश्वविद्यालय द्वारा यूजीसी तथा अन्य केंद्र प्रायोजित योजनाओं से धन प्राप्त करने के लिए निर्धारित शर्तों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। इसके अतिरिक्त, इन निधियों के उपयोग की देखरेख के लिए उचित निगरानी तंत्र होना चाहिए।
- सरकार द्वारा विश्वविद्यालय के परामर्श से यह सुनिश्चित किया जाए कि उसके संस्थानों में पर्याप्त संख्या में योग्य संकायों की सेवाएं उपलब्ध हों।
- विश्वविद्यालय द्वारा एक वस्तुनिष्ठ और सुदृढ़ उत्तर-पुस्तिका मूल्यांकन प्रणाली लागू करने पर विचार किया जाए और मूल्यांकन प्रक्रिया में ढिलाई के लिए मूल्यांकनकर्ताओं को जवाबदेह ठहराया जाए तथा यह

सुनिश्चित करने हेतु सारणीकरण सॉफ्टवेयर में पर्याप्त नियंत्रण शामिल किया जाए ताकि नियमों के अनुसार छात्रों को समान रूप से अनुग्रह अंक प्रदान किए जाएं।

- विश्वविद्यालय द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि उसके क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले सभी संस्थान कम से कम बुनियादी ढांचे के मानकों के न्यूनतम सेट को पूरा करते हों, जिन्हें यूजीसी और अन्य प्रासंगिक नियामक निकायों के वर्तमान दिशानिर्देशों के आधार पर रेखांकित किया जाना चाहिए।
- विश्वविद्यालय उन सभी पक्षों के साथ समझौतों को औपचारिक रूप दे सकता है जिन्हें भूमि और भवन पट्टे पर दिए गए थे। इन समझौतों में किराये या पट्टे की दरों के आवधिक संशोधन के प्रावधान शामिल होने चाहिए ताकि प्रचलित बाजार स्थितियों के साथ उनका सामंजस्य सुनिश्चित हो सके।

(अध्याय II)

विषयविशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा-

केरल में सहकारी समितियों का विनियमन

- सहकारिता विभाग, केरल सरकार की जुलाई 2024 से फरवरी 2025 तक आयोजित विषय-विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा (एसएससीए) के अंतर्गत केरल सहकारी समिति अधिनियम, 1969 (केसीएस अधिनियम) और नियमों के तहत वर्ष 2019-24 की अवधि के लिए 16,393 सहकारी समितियों के विनियमन का मूल्यांकन किया गया। इस लेखापरीक्षा का उद्देश्य सांविधिक अनुपालन, प्रशासनिक नियंत्रण और निगरानी तंत्र का आकलन करना था और इसने प्रणालीगत विसंगतियों को उजागर किया जिसने केरल में सहकारी आंदोलन के विकास को कमजोर किया।
- मार्च 2024 तक, 12,416 समितियां क्रियाशील थीं, 3,291 निष्क्रिय थीं और 686 परिसमापन के अधीन थीं। पंजीकरण में अत्यधिक विलंब हो रहा था, जिसमें 248 आवेदनों में से 60 प्रतिशत आवेदनों पर निर्धारित 90 दिनों के बाद कार्रवाई की गई, जिसमें 1,007 दिनों तक के विलंब के मामले भी शामिल थे। समितियों का वर्गीकरण नहीं किया गया, जिसका प्रत्येक तीन वर्ष में संशोधन किया जाना अपेक्षित था, जिससे स्टाफिंग मानदंड पुराने हो गए। सहकारी परीक्षा बोर्ड ने वर्तमान वर्गीकरणों का पालन किए बिना भर्तियां कीं, जिसके परिणामस्वरूप चार समितियों में अतिरिक्त कर्मचारी नियुक्त हो गए। सहकारी सतर्कता अधिकारी का पद, जिसे पुलिस उपमहानिरीक्षक द्वारा संभाले जाने का अधिदेश है, अगस्त 2024 तक संयुक्त रजिस्ट्रारों के पास था। 247 सतर्कता रिपोर्टों में से 195 में छह महीने से लेकर पांच वर्ष से अधिक का विलंब हुआ, और 185 मामलों में अपर्याप्त अनुवर्ती कार्रवाई की गई।
- निष्क्रिय समितियां, जिन्हें "सुप्त" या "अभिलेख उपलब्ध नहीं" के रूप में वर्गीकृत किया गया था, 46 वर्षों तक इसी स्थिति में रहीं, जिसमें 3,355 आरएनए और 302 सुप्त समितियां पुनरुद्धार या परिसमापन की प्रतीक्षा कर रही थीं, जिससे अभिलेखों के खोने और वसूल न किए गए बकाए का जोखिम बना रहा। सहकारी लेखापरीक्षा निगरानी और सूचना प्रणाली ने पुराने डेटा को निष्पादित किया, जिसमें उन समितियों को बाहर रखा गया जिनकी लेखापरीक्षा नहीं हुई थी, और क्रियाशील समितियों की संख्या में सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार के आंकड़ों के साथ विसंगतियां दिखाईं।
- विभाग ने महत्वपूर्ण योजना निधियों को अभ्यर्पित कर दिया, जिसमें लंबित मंजूरियों और व्यय प्रतिबंधों के कारण वर्ष 2023-24 में उपयोगिता घटकर 12.47 प्रतिशत रह गई, जो केरल बजट मैनुअल द्वारा निर्धारित वित्तीय अनुशासन आवश्यकताओं का उल्लंघन है। बकाया सरकारी/राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम ऋण और

शेयर कुल ₹1,173.29 करोड़ थे, जिसमें परीक्षण-जांच वाले जिलों में 315 मामलों में ₹492.94 करोड़ वसूल नहीं किए जा सके थे। हमने आरसीएस द्वारा रखे गए डेटा और संयुक्त रजिस्ट्रारों के डेटा के बीच विसंगतियां देखीं। वसूल न की गई लेखापरीक्षा फीस ₹16 करोड़ थी, जिसमें ₹6.63 करोड़ पांच वर्षों से अधिक समय से लंबित थे, इसके साथ ही सहकारी सदस्य राहत कोष और व्यावसायिक शिक्षा कोष के क्रमशः ₹35.44 करोड़ और ₹140.72 करोड़ देय थे।

- जारी किए गए 15,273 लेखापरीक्षा प्रमाणपत्रों में से 7,172 में दो से 22 महीने का विलंब हुआ, और 2,487 समितियों को अग्रेषित नहीं किए गए। 12,786 लेखापरीक्षा प्रमाणपत्रों के लिए कोई सुधार रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की गई, जिससे गबन जैसी त्रुटियां अनसुलझी रह गईं। निरीक्षण अनियमित थे, जिसमें 354 समितियों का पांच वर्षों से निरीक्षण नहीं किया गया था और कोई रोटेशन रजिस्टर नहीं रखा गया था। 147 से अधिक मध्यस्थता और 9,047 निष्पादन मामले पांच वर्षों से अधिक समय से लंबित रहे, जिससे निधियां अवरुद्ध हो गईं।

समग्र रूप से, पंजीकरण की समय-सीमा का कड़ाई से पालन करने, वर्गीकरण के अनिवार्य त्रिवार्षिक संशोधनों, पारदर्शिता के लिए एक केंद्रीकृत ऑनलाइन मंच, सुप्त/आरएनए समितियों पर सांविधिक कार्रवाई, समय पर लेखापरीक्षा और निरीक्षण तथा बकाए की वसूली के प्रति अनुपालन कुशल नहीं था। आरसीएस को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समितियां ऋणों का भुगतान करें, फीस प्रेषित करें और जवाबदेही बहाल करने तथा केरल के सहकारी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए सहायता का प्रभावी ढंग से उपयोग करें।

अनुशंसाएँ:

- आरसीएस द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि समितियों का पंजीकरण और आवेदनों को वापस करना/अस्वीकार करना निर्धारित समय-सीमा के अनुसार किया जाए।
- सरकार/आरसीएस द्वारा वर्गीकरण मानदंडों को संशोधित करने और प्रत्येक तीन वर्ष में समितियों को वर्गीकृत करने के लिए एक प्रणाली तैयार की जाए । यह सुनिश्चित किया जाए कि सहकारी परीक्षा बोर्ड के माध्यम से भर्ती के लिए आवेदन करते समय समितियां रजिस्ट्रार द्वारा प्रमाणित नवीनतम वर्गीकरण प्रस्तुत करें।
- सार्वजनिक विश्वास, जवाबदेही और सुगमता में सुधार के हित में, सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि विभाग एक केंद्रीकृत और समावेशी ऑनलाइन मंच स्थापित करे जो नागरिकों को सभी पंजीकृत सहकारी समितियों के विवरण देखने में सक्षम बनाए।
- आरसीएस विशेष रिपोर्ट और सतर्कता रिपोर्ट अग्रेषित करने में होने वाले विलंब से बचने के लिए कदम उठाया जाए और इन रिपोर्टों पर समय पर कार्रवाई शुरू की जाए । धारा 65, 66 और 68 के तहत जांच/निरीक्षण के लिए निर्धारित समय-सीमा का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।
- आरसीएस सहकारी लेखापरीक्षा निदेशक द्वारा जारी लेखापरीक्षा प्रमाणपत्रों/ज्ञापनों की समीक्षा की जाए जिसमें समितियों के कार्यकरण में महत्वपूर्ण कमियां शामिल हैं और यह सुनिश्चित किया जाए कि डीसीए के निष्कर्षों पर समितियों द्वारा समयबद्ध तरीके से कार्रवाई की जाए।
- सरकार द्वारा लेखापरीक्षा आयोजित करने, लेखापरीक्षा रिपोर्ट और लेखापरीक्षा ज्ञापन जारी करने तथा वास्तविक समय में इसकी निगरानी को सक्षम करने के लिए आईटी प्रणालियों को शुरू करने पर विचार किया जाए।

- सरकार/आरसीएस सरकारी सहायता के लेखांकन को ट्रैक करने और यह सुनिश्चित करने के लिए एमआईएस शुरू करने पर विचार किया जाए कि समितियां निर्धारित समय-सीमा के भीतर सरकारी/एनसीडीसी ऋणों और शेयरों के अपने बकाया बकाए का भुगतान करें।

(अध्याय III)

अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

लेखापरीक्षा में ऐसे मामले सामने आए जहां केरल सरकार द्वारा समुदाय के लाभ के लिए सार्वजनिक संपत्तियों के सृजन के लिए जारी की गई निधियां विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक निरीक्षण और ठोस कार्रवाई की कमी के कारण सरकारी धन के गबन, सहायता/राजस्व की हानि, भवनों पर अपव्यय, अनुचित लाभ प्रदान करने आदि के कारण अनुपयोगी/अवरुद्ध रहीं। विवरण नीचे दिए गए हैं।

गबन

संहिता के प्रावधानों के उल्लंघन और कार्यालय प्रमुख स्तर पर ढिलाई के परिणामस्वरूप सहायक कार्यकारी इंजीनियर, पत्तन इंजीनियरिंग उप-मंडल, थलाई, कन्नूर जिला के कार्यालय में कम प्रेषण के रूप में ₹1.05 लाख का संदिग्ध गबन हुआ।

(पैराग्राफ 4.1)

सहायता / हानि राजस्व की

- केरल मछुआरा कल्याण कोष बोर्ड द्वारा पात्र आयकर छूट का दावा करने में विफलता और परिणामस्वरूप ब्याज आय पर स्रोत पर कर की कटौती के कारण ₹72.02 लाख की अपरिहार्य राजस्व हानि हुई।

(पैराग्राफ 4.2)

- सरकारी मेडिकल कॉलेज, कोषिकोड़ को भारत सरकार की सहायता जारी करने में केरल सरकार द्वारा समय पर कार्रवाई न करने के कारण भारत सरकार की ₹6.85 करोड़ की निधि की हानि हुई, जिससे राजकोष पर बोझ बढ़ गया। इसके कारण सरकारी मेडिकल कॉलेज, कोषिकोड़ में कॉलेज ऑफ पैरामेडिकल एजुकेशन की स्थापना के अधूरे कार्यों पर भारत सरकार की ₹1.37 करोड़ की निधि भी अवरुद्ध हो गई

(पैराग्राफ 4.3)

अपव्यय

अनुसूचित जाति विकास विभाग द्वारा पट्टूपरम्बु अनुसूचित जाति कॉलोनी, थिक्काट्टूस्सेरी ब्लॉक, अलाप्पुझा में एक सामुदायिक भवन के निर्माण पर किया गया ₹84.32 लाख का व्यय अपव्यय साबित हुआ, क्योंकि निर्माण कार्य विभाग को भूमि के स्वामित्व का हस्तांतरण सुनिश्चित किए बिना एक निजी भूमि पर किया गया था।

(पैराग्राफ 4.4)

अनुचित लाभ प्रदान करना

जल संसाधन विभाग द्वारा दो कार्यों के मामले में निष्पादित न किए गए कार्य के लिए राशि की गलत कटौती के परिणामस्वरूप ठेकेदारों को ₹53.78 लाख के बराबर अनुचित लाभ प्रदान किया गया।

(पैराग्राफ 4.5)

भारतीय भाषाएं

भारत अविश्वसनीय भाषाई विविधता की भूमि है, जिसे अक्सर एक "भाषाई उपमहाद्वीप" के रूप में वर्णित किया जाता है। प्रस्तुत हैं भारत की भाषाओं के बारे में कुछ रोचक तथ्य :

1. **कोई "राष्ट्रभाषा" नहीं** -एक आम गलतफहमी यह है कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। वास्तविकता यह है कि भारत का संविधान किसी भी भाषा को "राष्ट्रभाषा" का दर्जा नहीं देता है। इसके बजाय, केंद्र सरकार आधिकारिक कार्यों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का उपयोग करती है।;
2. **आठवीं अनुसूची** -भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 प्रमुख भाषाओं को मान्यता दी गई है, जिन्हें आधिकारिक दर्जा प्राप्त है और उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। इनमें बंगाली, मराठी, तेलुगु, तमिल, उर्दू और संस्कृत जैसी भाषाएँ शामिल हैं।
3. **प्राचीन "शास्त्रीय" दर्जा**-सरकार उन भाषाओं को "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा प्रदान करती है जिनका लिखित इतिहास 1,500–2,000 वर्ष या उससे अधिक पुराना है। वर्तमान में, इस प्रतिष्ठित सूची में निम्नलिखित भाषाएँ शामिल हैं:
   - -तमिल (2004 में प्रदान किया गया)
   - -संस्कृत (2005)
   - -कन्नड़ (2008)
   - -तेलुगु (2008)
   - -मलयालम (2013)
   - -ओड़िया (2014)
4. **अपार विविधता**-भारत में भाषाओं की कुल संख्या का अनुमान इस बात पर निर्भर करता है कि कोई "भाषा" और "बोली" को कैसे परिभाषित करता है। 'पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' ने पूरे देश में 780 तक भाषाओं की पहचान की है। यह भारत को दुनिया के सबसे अधिक भाषाई रूप से विविध देशों में से एक बनाता है।
5. **चार प्रमुख भाषा परिवार**-अधिकांश भारतीय भाषाएँ चार प्रमुख परिवारों में से एक से संबंधित हैं:
   - **इंडो-आर्यन (भारतीय-आर्य):** सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएँ, जिनमें हिंदी, बंगाली, पंजाबी और मराठी शामिल हैं।
   - **द्रविड़:** मुख्य रूप से दक्षिण भारत में, जिनमें तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम शामिल हैं।
   - **ऑस्ट्रो-एशियाटिक:** मध्य और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में बोली जाती हैं (जैसे खासी और निकोबारी भाषाएँ)।
   - **सिनो-तिब्बती (चीनी-तिब्बती):** मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्रों और पूर्वोत्तर में बोली जाती हैं।

6. **तेलुगु का उपनाम:** तेलुगु को अक्सर "पूर्व की इतालवी" कहा जाता है क्योंकि इतालवी भाषा की तरह ही, इस भाषा के अधिकांश शब्द स्वर ध्वनि पर समाप्त होते हैं।
7. **संस्कृत का पुनरुद्धार:** हालाँकि संस्कृत दुनिया की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है, लेकिन आज यह बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाती है। हालाँकि, कुछ ऐसे अनूठे स्थान हैं जहाँ इसका उपयोग अभी भी किया जाता है, जैसे कर्नाटक का एक गाँव जहाँ निवासी सामान्य बातचीत में संस्कृत का उपयोग करते हैं।
8. **राज्य भाषाई विविधता:** कुछ राज्यों में एक से अधिक आधिकारिक भाषाएँ हैं। उदाहरण के लिए, झारखंड अपनी प्राथमिक आधिकारिक भाषा, हिंदी के अलावा 16 अन्य भाषाओं को द्वितीयक आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता देता है।
9. **संस्कृत का प्रभाव:** संस्कृत को "सभी भाषाओं की जननी" कहा जाता है क्योंकि यह कई इंडो-आर्यन भाषाओं की पूर्वज है और संस्कृत ने पूरे उपमहाद्वीप की भाषाओं की शब्दावली को गहराई से प्रभावित किया है।
10. **लिपि का कारक:** जबकि कई भाषाओं की अपनी अनूठी लिपियाँ हैं जैसे मलयालम के सुंदर लूप या तमिल के विशिष्ट मोड़, परंतु हिंदी, मराठी, नेपाली और संस्कृत जैसी कई भाषाएँ देवनागरी लिपि का उपयोग करके लिखी जाती हैं।
11. **दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषा:** कई भाषाविद् तमिल को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषा मानते हैं, क्योंकि इसकी एक लिखित साहित्यिक परंपरा है जो दो सहस्राब्दियों से अधिक समय से निर्बाध रूप से चली आ रही है।
12. **"सबसे अधिक बोली जाने वाली" भाषा:** हालांकि हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, लेकिन कुल बोलने वालों की संख्या के मामले में यह दुनिया में अंग्रेजी और मंदारिन चीनी के बाद तीसरे स्थान पर है।
13. **सबसे अधिक बोलियाँ:** हिंदी के अंतर्गत ही दर्जनों बोलियाँ (जैसे भोजपुरी, मगही, मैथिली, मारवाड़ी, ब्रजभाषा आदि) आती हैं, जो इसे एक विशाल भाषा समूह बनाती हैं।
14. **भाषा-विशिष्ट आंकड़े:** भारत सैकड़ों भाषाओं का घर है, लेकिन भारत की जनगणना के अनुसार, अधिकांश आबादी (90% से अधिक) संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से कोई एक बोलती है।
15. **अनूठे भाषाई क्षेत्र:** पूर्वोत्तर भारत के कुछ जनजातीय क्षेत्रों में, आपको बहुत कम संख्या में बोलने वाली भाषाएँ मिलेंगी, जिनमें से कुछ गंभीर रूप से संकटग्रस्त हैं क्योंकि युवा पीढ़ी तेजी से अधिक प्रभावशाली क्षेत्रीय भाषाओं को अपना रही है।

श्री दीपक के. वी.
सहायक पर्यवेक्षक

इंडियन कॉफ़ी हाउस का इतिहास

एक ऐसी जगह जिसे बहुत से लोग पसंद करते हैं । इंडियन कॉफ़ी हाउस भारत के सबसे मशहूर रेस्टोरेंट चेन में से एक है। कई सालों से यह लोगों की पसंदीदा जगह रही है, जहाँ वे कॉफ़ी, स्वादिष्ट खाने और दोस्ताना बातचीत का मज़ा लेते हैं। छात्र, ऑफ़िस में काम करने वाले लोग, परिवार और बुज़ुर्ग सभी यहाँ आना पसंद करते हैं क्योंकि यह जगह सादी, शांत और सस्ती है।

बीसवीं सदी की शुरुआत में भारत में कॉफ़ी लोकप्रिय हुई। लोगों को ज़्यादा कॉफ़ी पीने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, कॉफ़ी उगाने वाले संगठनों ने अलग-अलग शहरों में कॉफ़ी हाउस खोलने शुरू किए। इन कैफ़े ने कई भारतीयों को ताज़ी बनी कॉफ़ी से परिचित कराया और ऐसी सुखद जगहें दीं जहाँ लोग बैठकर आराम कर सकते थे।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, इन कॉफ़ी हाउस को चलाने की ज़िम्मेदारी मुश्किल होती गई। इनमें से कई बंद होने की कगार पर थे। जिन कर्मचारियों ने सालों तक ईमानदारी से काम किया था, उन्हें अचानक अपनी नौकरी खोने का डर सताने लगा। उस मुश्किल समय में, एक नए विचार ने सब कुछ बदल दिया।

हार मानने के बजाय, कर्मचारी एक साथ आए और मिलकर काम करने का फ़ैसला किया। उन्हें विश्वास था कि अगर वे साथ मिलकर काम करेंगे, तो वे अपनी नौकरी और अपने पसंदीदा कैफ़े, दोनों को बचा सकते हैं। कर्मचारियों ने को-ऑपरेटिव सोसायटियाँ बनाईं और टीमवर्क व लगन के साथ रेस्टोरेंट चलाए। इस नई शुरुआत ने इंडियन कॉफ़ी हाउस को बचा लिया। इस तरीक़े ने इंडियन कॉफ़ी हाउस को एक नई शुरुआत दी और यह एक प्रेरणादायक उदाहरण बन गया कि कैसे टीमवर्क चुनौतियों का सामना कर सकता है।

इस नई शुरुआत के बाद, इंडियन कॉफ़ी हाउस धीरे-धीरे कई कस्बों और शहरों में फैल गया। हालाँकि हर शाखा स्थानीय लोगों की सेवा करती थी, लेकिन उन सभी में सादगी और मेहमाननवाज़ी की एक जैसी भावना थी।

इंडियन कॉफ़ी हाउस इसलिए लोकप्रिय हुआ क्योंकि यहाँ वाजिब दामों पर अच्छा खाना और ताज़ा कॉफ़ी मिलती थी। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति का एक जैसा सम्मान किया जाता था, चाहे वे कोई भी हों। सफ़ेद यूनिफ़ॉर्म और रंग-बिरंगी पगड़ी पहने वेटर्स कॉफ़ी हाउस की एक खास पहचान बन गए। उनकी विनम्र सेवा और गर्मजोशी भरी मुस्कान ग्राहकों को किसी आम कॉफ़ी शॉप से कहीं ज़्यादा अपनापन महसूस कराती थी।

इंडियन कॉफ़ी हाउस भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का एक अहम हिस्सा है। इसकी हर ब्रांच में अनगिनत मुलाकातों, दोस्ती, सपनों और यादों की कहानियाँ बसी हैं। लोग भले ही यहाँ एक कप कॉफ़ी पीने आते हों, लेकिन अक्सर वे यहाँ से कुछ ज़्यादा ही लेकर जाते हैं—जैसे कोई सुखद बातचीत, गर्मजोशी भरी मुस्कान या अपनापन महसूस होना।यह सिर्फ़ एक रेस्टोरेंट नहीं है—यह दोस्ती, सहयोग और भारत की मेहमाननवाज़ी की समृद्ध परंपरा का प्रतीक है।

सुश्री गौरीनंदना एस,
पुत्री सुश्री संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वायु की गुणवत्ता

वायु अदृश्य होती है, लेकिन उसका प्रभाव अत्यंत शक्तिशाली होता है। हम हर सांस के साथ स्वच्छ, ताज़ी वायु पर निर्भर रहते हैं—सोचने के लिए, बढ़ने के लिए और स्वस्थ रहने के लिए। लेकिन दु:ख की बात है कि हमारे आसपास की वायु अब पहले जैसी शुद्ध नहीं रही। वाहनों का धुआँ, कारखानों से निकलने वाले रसायन, कचरा जलाना, और पेड़ों की कटाई—इन सबने हमारे वातावरण को हानिकारक गैसों और सूक्ष्म कणों से भर दिया है।

ये कण भले ही आँखों से दिखाई न दें, लेकिन इनके प्रभाव हमारे जीवन पर गहरा असर डालते हैं।

आज शहरों में सुबह की धूप भी धुंधली नज़र आती है और साँस लेना पहले से कहीं अधिक कठिन महसूस होता है।

भारत में वायु प्रदूषण एक गंभीर राष्ट्रीय चिंता बन चुका है। शोध बताते हैं कि सभी भारतीय ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जहाँ की वायु गुणवत्ता सुरक्षित मानकों से कई गुना खराब है।

प्रदूषित वायु के कारण हर वर्ष लाखों लोग समय से पहले स्वास्थ्य समस्याओं का शिकार हो जाते हैं और अपने जीवन के कई वर्षों को खो देते हैं। कई भारतीय शहर लगातार दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में शामिल होते हैं, खासकर सर्दियों के मौसम में जब प्रदूषण और भी घना हो जाता है।

इसका मतलब है कि आज हमारी रोज़मर्रा की सबसे सरल क्रिया—सांस लेना—भी जोखिम भरी हो गई है।

दिल्ली में यह स्थिति और भी गंभीर है। हर वर्ष सर्दी के मौसम में शहर घने स्मॉग की चादर से ढक जाता है। इसके पीछे प्रमुख कारण हैं—वाहनों का उत्सर्जन, निर्माण स्थलों की धूल, औद्योगिक धुआँ, पटाखों का उपयोग और आसपास के राज्यों में पराली जलाना। दिल्ली अक्सर "बहुत खराब" से लेकर "गंभीर" वायु गुणवत्ता स्तर दर्ज करती है, जिससे सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि लंबे समय तक ऐसे वातावरण में रहने से दिल्ली के लोगों की जीवन प्रत्याशा 8–12 वर्ष तक कम हो सकती है। स्कूलों को बंद करना पड़ता है, मास्क पहनना रोज़मर्रा की ज़रूरत बन जाती है, और अस्पतालों में सांस संबंधी समस्याओं के मरीजों की संख्या बढ़ जाती है।

सड़कों पर धुंध की वजह से दृश्यता कम हो जाती है, और कई लोगों को सिरदर्द, आँखों में जलन और अत्यधिक थकान महसूस होती है।

खराब वायु गुणवत्ता सिर्फ बुजुर्गों को नहीं, बल्कि बच्चों और विद्यार्थियों को सबसे ज़्यादा प्रभावित करती है। यह खाँसी, दमा, सिरदर्द, थकान, एलर्जी और फेफड़ों की वृद्धि में रुकावट जैसी समस्याएँ पैदा कर सकती है। बच्चे घंटों तक प्रदूषित वातावरण में खेलते और स्कूल आते-जाते हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य पर लम्बे समय तक असर पड़ता है।

प्रदूषित वायु हमारे शरीर को हर दिन धीरे-धीरे कमजोर करती है, बिना हमें पता चले।

सरकार ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम और दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान जैसी पहलें लागू की हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, नए प्रदूषण नियंत्रण मानक बनाए जा रहे हैं और अधिक मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित किए जा रहे हैं। लेकिन इन प्रयासों की सफलता तभी संभव है जब नागरिक भी अपनी भूमिका समझें और पूरी ज़िम्मेदारी निभाएँ।

हम पेड़ लगाकर, वाहन प्रदूषण कम करके, प्लास्टिक जलाने से बचकर, स्वच्छ ऊर्जा अपनाकर और दूसरों को जागरूक करके अपने वातावरण को बेहतर बना सकते हैं।

हर छोटा कदम—जैसे निजी वाहन की बजाय सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, सिग्नल पर इंजन बंद करना, ऊर्जा की बचत करना, और त्योहारों में पटाखे न फोड़ना—वायु की गुणवत्ता सुधारने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

जब समाज के सभी लोग मिलकर प्रयास करेंगे, तभी हम एक स्वच्छ और स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर पाएंगे।

अंत में, भारत में वायु की गुणवत्ता चिंताजनक है, लेकिन पूरी तरह निराशाजनक नहीं। इसे सुधारने की शक्ति हमारे अपने हाथों में है। आज हम जो वायु सांस लेते हैं, वही आने वाली पीढ़ियों की नींव बनेगी।

आइए हम वचन लें कि हम इस वायु को सुरक्षित रखेंगे, इसे संजोएंगे और इसे बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे—अपने लिए, अपने परिवार के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए।

सुश्री आकांशा गहलोत,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बगिया का सुख

रामेश्वर प्रसाद चालीस वर्ष तक सरकारी स्कूल में मास्टरी करने के बाद जब सेवानिवृत्त हुए, तो सोचा था कि अब आराम के दिन आएँगे। पर आराम भी एक बोझ हो सकता है, यह उन्हें बाद में समझ में आया। पत्नी दो वर्ष पहले चल बसी थीं, और इकलौता बेटा अमेरिका में किसी बड़ी कंपनी में नौकरी करता था। साल में एक बार फोन पर बात हो जाती, कभी-कभी वीडियो कॉल भी हो जाता, पर उससे घर का सूनापन कम नहीं होता था।

घर बड़ा था, आँगन वाला, कभी हँसी-खुशी से भरा रहता था। अब वहाँ केवल रामेश्वर बाबू की खाँसी की आवाज़ गूँजती थी, या फिर रेडियो पर बजते पुराने भजन। सुबह उठकर चाय बनाते, अखबार पढ़ते, दोपहर को सो जाते, शाम को छत पर बैठकर डूबते सूरज को देखते रहते। यही उनकी दिनचर्या बन गई थी। मन में एक अजीब-सी रिक्तता घर कर गई थी, जिसे वे किसी को समझा भी नहीं पाते थे।

एक दिन पड़ोस की छोटी लड़की सुनयना, जो शायद आठ-नौ वर्ष की रही होगी, दीवार के उस पार से झाँककर बोली, "बाबा, आपके आँगन में तो कुछ भी नहीं उगा। हमारे आँगन में तो अम्मा ने गेंदे के फूल लगाए हैं।"

रामेश्वर बाबू मुस्कुरा दिए। बच्चों की बातें कभी-कभी भीतर तक उतर जाती हैं। उस रात वे बहुत देर तक सोच में डूबे रहे। सचमुच, कितने वर्ष हो गए थे उन्होंने अपने आँगन की ओर ध्यान से नहीं देखा था। कभी माली हुआ करता था घर में, तब उनकी पत्नी फूलों की बड़ी शौकीन थीं। उनके जाने के बाद बगिया भी मानो मुरझा गई थी।

अगले दिन सुबह-सुबह रामेश्वर बाबू ने एक पुरानी कुदाल ढूँढ़ निकाली, जो स्टोर-रूम के कोने में जंग खाई पड़ी थी। हाथों में वर्षों बाद मिट्टी लगी तो एक अजीब-सा सुख मिला। जिस मिट्टी को वे पैरों तले रौंदते हुए निकल जाया करते थे, आज उसी मिट्टी को उँगलियों से टटोलते हुए उन्हें लगा जैसे किसी पुराने मित्र से भेंट हो रही हो।

पहले दिन उन्होंने बस थोड़ी-सी क्यारी साफ की। कमर दर्द करने लगी, साँस फूल गई, पर मन में एक उत्साह जाग उठा जो बरसों से सोया पड़ा था। दूसरे दिन बाज़ार जाकर गेंदे और गुलाब के कुछ पौधे ले आए। दुकानदार ने पूछा, "बाबूजी, घर में कोई माली रखा है क्या?" रामेश्वर बाबू हँसकर बोले, "नहीं भाई, अब खुद ही माली हूँ, खुद ही मालिक।"

धीरे-धीरे बगिया सजने लगी। रोज़ सुबह चार बजे उठकर वे क्यारियों में पानी देते, खर-पतवार निकालते, पौधों से बातें करते। कभी-कभी अकेले में हँस भी पड़ते, अपने ही ऊपर, कि इस उम्र में मिट्टी से इतना लगाव हो गया। पर यह लगाव उन्हें जीवन की ओर वापस खींच रहा था, यह वे साफ महसूस कर रहे थे।

सुनयना रोज़ शाम को दीवार के पास आकर खड़ी हो जाती। "बाबा, यह कौन-सा फूल है?" "यह गुड़हल है, बिटिया।" "और यह वाला?" "यह चंपा है, इसकी खुशबू रात को आती है।" बच्ची की जिज्ञासा और उसकी निश्छल हँसी में रामेश्वर बाबू को अपने बचपन के दिन याद आ जाते।

एक शाम बगिया में पानी देते समय एक अजनबी बुज़ुर्ग सज्जन उनके फाटक के पास रुक गए। सफेद कुर्ता-धोती, कंधे पर झोला, चेहरे पर सादगी की छाप। "क्षमा करें," उन्होंने कहा, "मैं यहाँ नया आया हूँ, बगल की गली में रहता हूँ। आपकी बगिया देखकर रुक गया। बड़ी सुंदर है।"

रामेश्वर बाबू ने फाटक खोल दिया। "आइए, अंदर आइए। चाय पिएँगे?"

वे सज्जन विश्वनाथ शुक्ल निकले, रेलवे से सेवानिवृत्त, विधुर, और अकेले। दोनों की कहानी एक जैसी थी, बच्चे बाहर, घर में सन्नाटा, दिन काटने का कोई सहारा नहीं। पर विश्वनाथ बाबू को पेड़-पौधों का गहरा ज्ञान था, जो उन्होंने अपने गाँव के दिनों में सीखा था।

"यह मिट्टी थोड़ी भारी है," उन्होंने क्यारी की मिट्टी उँगलियों में मसलते हुए कहा, "इसमें थोड़ी बालू मिला दीजिए, और गोबर की खाद भी। गुलाब को धूप ज़्यादा चाहिए, इसे उस कोने में लगाइए जहाँ सुबह की धूप आती है।"

रामेश्वर बाबू चकित रह गए, इतने वर्षों की मास्टरी में उन्होंने किताबों से बहुत कुछ सीखा था, पर यह जो ज्ञान विश्वनाथ बाबू के पास था, वह मिट्टी और अनुभव से आया था, और उसकी अपनी ही एक गरिमा थी।

उस दिन के बाद विश्वनाथ बाबू का आना-जाना बढ़ गया। शाम को दोनों बगिया में बैठकर घंटों बातें करते, कभी पौधों की, कभी अपने बचपन की, कभी देश-दुनिया की। चाय की चुस्कियों के बीच हँसी-मज़ाक भी होता। रामेश्वर बाबू को लगने लगा कि जैसे जीवन में फिर से कोई रौनक लौट आई हो।

महीनों बीत गए। बगिया अब पहचानी नहीं जाती थी। गेंदे, गुलाब, चंपा, चमेली, रंग-बिरंगे फूलों से आँगन जगमगा उठता। तितलियाँ मँडराने लगीं, गौरैया चहचहाने लगीं। पड़ोस के और बच्चे भी आने-जाने लगे, कोई फूल तोड़ने की ज़िद करता तो रामेश्वर बाबू प्यार से समझाते, "फूल को डाली पर रहने दो बेटा, तभी वह सुंदर लगता है। तोड़ने से तो वह मुरझा जाएगा।"

विश्वनाथ बाबू ने एक दिन सुझाव दिया, "क्यों न हम मोहल्ले के और बुज़ुर्गों को भी बुलाएँ? सबके घर में तो यही हाल है, अकेलापन।" रामेश्वर बाबू को बात जँच गई। धीरे-धीरे चार-पाँच और बुज़ुर्ग जुड़ गए। कोई सब्ज़ी उगाने में माहिर था, कोई पुराने किस्से सुनाने में। हर शनिवार शाम को सब बगिया में इकट्ठे होते, अपने-अपने घर से कुछ न कुछ खाने की चीज़ ले आते, चाय के साथ गपशप चलती।

एक शाम मोहल्ले की एक विधवा स्त्री, कमला देवी, अपने पोते के साथ वहाँ से गुज़र रही थीं। पोता बगिया देखकर मचल उठा। कमला देवी ने संकोच से पूछा, "क्या हम भी कभी-कभी आ सकते हैं?" रामेश्वर बाबू ने हाथ जोड़कर कहा, "यह बगिया अब अकेले मेरी नहीं, हम सबकी है। आइए, जब जी चाहे आइए।"

धीरे-धीरे वह छोटी-सी बगिया मोहल्ले का केंद्र बन गई। बच्चे वहाँ खेलते, बुज़ुर्ग वहाँ बैठते, स्त्रियाँ शाम को टहलने आतीं। जो आँगन कभी सूना पड़ा रहता था, वह अब हँसी-ठिठोली से गूँजने लगा।

एक दिन रामेश्वर बाबू के बेटे का फोन आया। बहुत दिनों बाद बात हो रही थी। बेटे ने पूछा, "पिताजी, आजकल आवाज़ में बड़ा उत्साह लग रहा है। तबीयत तो ठीक है न?"

रामेश्वर बाबू हँस पड़े। "तबीयत बिल्कुल ठीक है बेटा। अब तो सुबह चार बजे आँख खुल जाती है, बगिया की याद आती है। शाम को दोस्तों के साथ बैठकर गपशप होती है। जीवन में फिर से रौनक आ गई है।"

बेटा थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला, "पिताजी, मुझे बहुत खुशी हुई यह सुनकर। मैं सोचता था आप अकेले परेशान होंगे, इसीलिए फोन करने से भी डरता था कि कहीं आपका दुख न याद आ जाए।"

"नहीं बेटा," रामेश्वर बाबू ने कहा, "जो दुख मिट्टी में हाथ डालने से मिट सकता था, वह मैं अकेला ढोता रहा। अब समझ में आया कि सुख बड़ी-बड़ी चीज़ों में नहीं, छोटी-छोटी बातों में छिपा होता है, एक पौधे का बढ़ना, एक फूल का खिलना, एक दोस्त की हँसी। यही असली धन है इस उम्र का।"

फोन रखकर रामेश्वर बाबू छत पर आ गए। नीचे आँगन में विश्वनाथ बाबू और कुछ बच्चे मिलकर एक नई क्यारी बना रहे थे। सुनयना दौड़ती हुई आई, "बाबा, कल मेरे स्कूल में फूल ले जाने हैं, आप देंगे न?"

"ज़रूर बिटिया," रामेश्वर बाबू मुस्कुराए, "बगिया में सबके लिए फूल हैं।"

सूरज ढल रहा था, आसमान लाल-सुनहरी आभा से भर गया था। नीचे बगिया में हँसी की आवाज़ें गूँज रही थीं। रामेश्वर बाबू ने गहरी साँस ली और सोचा, जिस सुख को वे न जाने कहाँ-कहाँ ढूँढ़ते रहे, वह तो हमेशा उनके अपने आँगन की मिट्टी में दबा पड़ा था। बस उसे सींचने की देर थी।

पर जीवन में सुख सदा एक-सा नहीं रहता, यह रामेश्वर बाबू भली-भाँति जानते थे। उस वर्ष जेठ की गर्मी असाधारण रूप से कठोर पड़ी। लू के थपेड़ों से बगिया की कोमल पत्तियाँ मुरझाने लगीं। कुआँ भी सूखने लगा था, और नगरपालिका का नल दिन में बस एक घंटे के लिए आता। रामेश्वर बाबू सुबह-शाम बाल्टी लेकर दौड़ते, पर अकेले कितना पानी ढो पाते? एक दिन देखा कि उनका प्रिय गुलाब, जिसे उन्होंने अपने हाथों से रोपा था, बुरी तरह मुरझा गया है। उस दिन वे बहुत उदास बैठे रहे।

शाम को विश्वनाथ बाबू आए तो उन्हें यूँ मायूस देखकर पूछा, "क्या हुआ भाई साहब?"

"यह गर्मी सब कुछ लील जाएगी," रामेश्वर बाबू ने भारी मन से कहा, "इतनी मेहनत से जो बगिया सजाई थी, वह सूखकर वीरान हो जाएगी।"

विश्वनाथ बाबू मुस्कुराए। "अकेले सोचने से ही तो यह डर बड़ा लगता है। कल मोहल्ले की बैठक बुलाते हैं।"

अगले दिन शनिवार की सभा में विश्वनाथ बाबू ने प्रस्ताव रखा, सब मिलकर बारी-बारी से पानी की व्यवस्था करें। किसी के घर में बोरिंग था, किसी के यहाँ बड़ा टैंकर मँगाने की क्षमता थी। कमला देवी ने कहा, "मैं रोज़ सुबह अपने घर से दो बाल्टी ला दिया करूँगी।" सुनयना के पिता ने पुरानी साइकिल पर पीपा बाँधकर पानी लाने का बीड़ा उठाया। छोटे-छोटे बच्चे भी मिट्टी के घड़ों में पानी भरकर लाने लगे, मानो कोई खेल खेल रहे हों।

धीरे-धीरे बगिया फिर हरी होने लगी। गुलाब की जड़ में नई कोंपलें फूटीं। रामेश्वर बाबू ने उस दिन समझा कि जो काम अकेले असंभव लगता है, वही मिलकर करने से सहज हो जाता है। बगिया अब केवल उनकी मेहनत का फल नहीं रही, बल्कि पूरे मोहल्ले के प्रेम और परिश्रम का प्रतीक बन गई थी।

वर्षा ऋतु आई तो बगिया ने नया रूप धारण किया। केतकी और मोगरे की खुशबू से आँगन महक उठा। इसी बीच एक दिन एक अप्रत्याशित घटना घटी। मोहल्ले के जगदीश पांडे, जो कभी रामेश्वर बाबू से पुरानी रंजिश रखते थे, बात इतनी पुरानी थी कि अब दोनों को ठीक से याद भी नहीं था कि झगड़ा किस बात पर हुआ था, एक शाम बगिया के फाटक के पास आकर खड़े हो गए। उनका चेहरा उतरा हुआ था।

"रामेश्वर बाबू," उन्होंने संकोच से कहा, "मेरी पोती बहुत बीमार है। डॉक्टर ने कहा है कि उसे शांत वातावरण चाहिए। सुना है आपकी बगिया में बड़ी शांति है। क्या मैं उसे कभी यहाँ ला सकता हूँ?"

पुरानी रंजिश का कोई नामोनिशान रामेश्वर बाबू के मन में नहीं बचा था। उन्होंने तुरंत जगदीश पांडे का हाथ थाम लिया। "भाई साहब, यह बगिया द्वार सबके लिए खुला है, चाहे मित्र हो या न हो। कल ही ले आइए बिटिया को।"

अगले दिन से जगदीश पांडे की पोती रोज़ शाम को बगिया में आने लगी। वह छाँव में बैठकर चित्र बनाती, कभी तितलियों के पीछे भागती। महीने भर में उसके गालों पर फिर से रौनक लौट आई। जगदीश पांडे की आँखों में जो कृतज्ञता थी, उसने रामेश्वर बाबू के मन की एक पुरानी गाँठ भी खोल दी,यह अहसास कि क्षमा और मित्रता किसी भी उम्र में, किसी भी दूरी को पाट सकती है।

धीरे-धीरे जगदीश पांडे भी शनिवार की सभाओं में आने लगे। दोनों बुज़ुर्ग अब घंटों बैठकर पुरानी बातें हँसी में उड़ा देते, जैसे बचपन के मित्र हों।

एक वर्ष बीत गया। सर्दी की एक धूप भरी सुबह रामेश्वर बाबू बगिया में बैठे अपनी डायरी में कुछ लिख रहे थे,यह आदत उन्हें विश्वनाथ बाबू ने सिखाई थी, हर दिन का हाल कलम से उतारने की। पन्ने पलटते हुए उन्हें वह दिन याद आया जब सुनयना ने पहली बार दीवार के पार झाँककर कहा था, "बाबा, आपके आँगन में तो कुछ भी नहीं उगा।"

आज वही आँगन मोहल्ले भर का आश्रय-स्थल बन चुका था। बच्चे वहाँ पढ़ते, बुज़ुर्ग वहाँ बैठकर अपने दुख-सुख बाँटते, स्त्रियाँ शाम को वहीं इकट्ठी होकर गीत गातीं। नगरपालिका के एक अधिकारी ने आकर सुझाव भी दिया था कि इस बगिया को मोहल्ले का "सामुदायिक उद्यान" घोषित कर दिया जाए, ताकि आगे भी इसकी देखभाल में सबका हाथ बना रहे।

विश्वनाथ बाबू पास आकर बैठ गए। "क्या लिख रहे हैं भाई साहब?"

रामेश्वर बाबू ने डायरी बंद करते हुए मुस्कुराकर कहा, "यही सोच रहा था कि जीवन कितना अजीब है। चालीस साल पढ़ाया, पर यह पाठ मुझे एक छोटी बच्ची और मुट्ठी भर मिट्टी ने सिखाया,कि हाथ बाँटने से बोझ हल्का होता है, और सुख बाँटने से बढ़ता है।"

दूर से बच्चों की किलकारियाँ सुनाई दे रही थीं। सुनयना अपनी सहेलियों के साथ दौड़ती हुई आई और रामेश्वर बाबू का हाथ पकड़कर बोली, "बाबा, चलिए, आज नए पौधे लगाने हैं!"

रामेश्वर बाबू उठ खड़े हुए, हाथ में कुदाल थामी, और बच्चों के पीछे-पीछे चल दिए। उनके चेहरे पर वह संतोष था जो जीवन भर की तलाश के बाद, आखिरकार, एक छोटी-सी बगिया की मिट्टी में मिल गया था।

सुश्री संध्या पी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ओलंपिक पदक

मेरे घर और मेरी दादी के पुश्तैनी घर के बीच सिर्फ़ एक किलोमीटर का रास्ता है। हम बच्चे कभी-कभार वहाँ जाते हैं। जिस रास्ते से हम जाते हैं, उसके एक तरफ खेत हैं, दूसरी तरफ एक छोटी सी नदी है, और उसके बगल में नारियल के बाग हैं। जगह-जगह छोटे-छोटे घर हैं। कुल मिलाकर, यह एक खूबसूरत ग्रामीण इलाका है।

एक दिन, मैं और मेरी छोटी बहन अपनी माँ के पैतृक घर से लौट रहे थे। मैं उन लोगों में से थी जिन्हें बहुत धीरे चलने की आदत थी। मेरी बहन ऐसे चल रही थी, जैसे पी.टी. ऊषा के बाद अगली रनर.वही.होगी। इन सबके अलावा, वह स्कूल में नंबर एक धावक भी थी।

कभी-कभी उसे एक विशेष प्रकार का जिन्न मिल जाता है। ऐसा मुख्यतः तब होता था जब हम दोनों कहीं पैदल जा रहे होते थे। वह जिन्न क्या है? मुझे अकेला छोड़कर आगे भागने का स्वभाव। यह उसके लिए हमेशा मज़ेदार था। वह जानती है कि मैं घर पैदल ही जाऊंगी, भले ही यह धीमी गति से हो। मैं अपनी मां से इस बारे में शिकायत करती थी, लेकिन अगर कभी-कभार ऐसा नहीं करती थी, तो वह दुखी हो जाती थीं।

तो, हमेशा की तरह, एक दिन हम दोनों अपनी माँ के घर गए और जब वापस लौटे तो शाम हो चुकी थी। रास्ते में एक जगह था जहां थोड़ा अंधेरा था और कुछ ही घर थे। एक छोटे से तालाब और अनेक पेड़ों से युक्त यह स्थान जंगल जैसा प्रतीत होता था। जैसे ही वहां पहुंची, बहन ने अपना असली रूप प्रकट कर दिया। वह मुझे पीछे छोड़कर बहुत तेजी से आगे भाग गई। मेरी उम्र तब लगभग 10 वर्ष होगी। मैं भी डर गई और चिल्लाते हुए उसके पीछे भागी। मैं कितना भी भागी, उसका एक कण भी दिखाई नहीं दिया। जब मैं थोड़ा आगे बढ़ी, तो मुझे दूर से उसके रोने की आवाज़ सुनाई दी। मैं उसकी तरफ़ दौड़ी।

जब मैं वहां गई तो ऐसा लग रहा था कि वह नदी के किनारे से कूदकर खेल रही है। मैंने मन ही मन सोचा, वह इस छलांग के लिए क्यों चिल्ला रही है ? जब मैं थोड़ा नजदीक गई और ध्यान से देखा तो मैं दृश्य देखकर भयभीत हो गई । उसके पैर के चारों ओर एक साँप लिपटा हुआ था।

मैं जोर से चिल्लाने लगी, "ओह, साँप!" उसने कहा, यह एक चेकर्ड कीलबैक है,यह सड़क पर पड़ा था और मेरे पैर पर चढ़ गया और मुझे लपेट लिया। अपनी पूरी हिम्मत जुटाकर, वह किसी तरह अपने दोनों पैरों और हाथों का उपयोग करके उसे उठाकर नदी में फेंकने में सफल रही। हालांकि वह वही थी जिसने वास्तव में चेकर्ड कीलबैक उठाया पर, फिर भी मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मुझे काट लिया गया हो।

जब हम घर पहुंचे और मां को घटना बताई तो उन्होंने हमें कड़ी सजा दी। खैर, उस दिन चेकर्ड कीलबैक वाली घटना के साथ ही उसका दौड़ना बंद हो गया। मुझे बहुत खुशी हुई कि एक लम्बे समय से चली आ रही समस्या का समाधान हो गया। मुझे यह जानकर शांति मिली कि वह अब मुझे अकेला नहीं छोड़ेगी। लेकिन क्या चेकर्ड कीलबैक को पता है कि उसने एक ओलंपियन का भविष्य बर्बाद कर दिया ? अगर इस तरह से सोचें तो यह थोड़ा दुःखद है।

सुश्री देविका के. दीपक,
सुपुत्री दीपक के. वी.,सहायक पर्यवेक्षक

पहिया: एक छोटा सा घेरा जिसने दुनिया बदल दी

इंसानों के किए गए सभी आविष्कारों में से पहिया सबसे उपयोगी आविष्कारों में से एक है। आज यह इतना आम हो गया है कि हम शायद ही इस पर ध्यान देते हैं। हम बसों और कारों में यात्रा करते हैं, साइकिल चलाते हैं, सूटकेस खींचते हैं, ट्रॉली का इस्तेमाल करते हैं और पहियों वाली कुर्सियों पर भी बैठते हैं। एक साधारण गोल चीज़ ने हज़ारों सालों से लोगों की ज़िंदगी आसान बना दी है।

पहिए से पहले की ज़िंदगी

पुराने ज़माने में कोई गाड़ी या मशीन नहीं होती थी। लोग हर चीज़ हाथ से या कंधे पर ढोते थे। भारी पत्थर, लकड़ी और खाने-पीने की चीज़ों को ज़मीन पर घसीटना पड़ता था। यह काम धीमा, मुश्किल और थकाऊ था। बड़ी चीज़ों को लंबी दूरी तक ले जाना एक बड़ी चुनौती थी।

लोग भारी सामान ढोने का आसान तरीका चाहते थे। इस ज़रूरत ने उन्हें प्रकृति को देखने और बेहतर आइडिया सोचने के लिए प्रेरित किया।

पहिए की ओर पहला कदम

एक दिन, लोगों ने देखा कि पेड़ के गोल तने ज़मीन पर आसानी से लुढ़कते हैं। उन्होंने इन लट्ठों के ऊपर भारी चीज़ें रखीं और उन्हें आगे धकेला। जैसे ही हर लट्ठा पीछे से बाहर निकलता, उसे फिर से आगे रख दिया जाता। हालाँकि इस तरीके में मेहनत लगती थी, लेकिन भारी सामान को घसीटने के बजाय इस तरह ले जाना बहुत आसान था।

यह साधारण सी बात इतिहास के सबसे महान आविष्कारों में से एक की शुरुआत बनी।

समय के साथ, लोगों ने लकड़ी के मोटे टुकड़ों को गोल आकार में काटना सीख लिया। बीच में एक छेद किया गया और उसमें से लकड़ी की एक छड़ (धुरी) निकाली गई। गोल लकड़ी की डिस्क घूम सकती थी जबकि छड़ अपनी जगह पर स्थिर रहती थी। यह साधारण डिज़ाइन पहला पहिया और धुरी (एक्सल) बना।

शुरुआती पहिए भारी होते थे और ठोस लकड़ी से बने होते थे। भले ही वे एकदम सही नहीं थे, लेकिन उन्होंने इंसानी मेहनत को बहुत कम कर दिया।

पहिए ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी को कैसे बदला

पहिए के आविष्कार से कई बदलाव आए। किसान अपनी फसल आसानी से ले जाने लगे। निर्माण कार्य करने वाले बड़े-बड़े पत्थर एक जगह से दूसरी जगह ले जाने लगे। व्यापारी सामान खरीदने और बेचने के लिए दूर-दूर तक यात्रा करने लगे। परिवार बिना सारा सामान हाथ में उठाए खाना, पानी और रोज़मर्रा की दूसरी ज़रूरत की चीज़ें एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकते थे।

जैसे-जैसे यात्रा आसान हुई, गाँव एक-दूसरे से जुड़ने लगे। व्यापार बढ़ा और लोग अक्सर अपने विचार, हुनर और संस्कृति का आदान-प्रदान करने लगे।

बेहतर यात्रा के लिए बेहतर पहिए

लोग पहिए को बेहतर बनाते रहे। उन्होंने इसे हल्का और मज़बूत बनाया। कई गाड़ियों में ठोस लकड़ी के पहियों की जगह लकड़ी की तीलियों वाले पहिए इस्तेमाल होने लगे। बाद में, मज़बूती और टिकाऊपन बढ़ाने के लिए उनमें धातु के रिम लगाए गए।

रबर के टायरों की खोज ने यात्रा को आसान और आरामदायक बना दिया। आज, अलग-अलग तरह की गाड़ियों और मशीनों के लिए स्टील, एल्युमीनियम और अच्छी क्वालिटी वाले रबर जैसी मज़बूत चीज़ों से आधुनिक पहिए बनाए जाते हैं।

हमारे आस-पास पहिया

पहिए का इस्तेमाल सिर्फ़ आने-जाने या सामान ढोने तक ही सीमित नहीं है। यह हमारे रोज़मर्रा के इस्तेमाल की कई चीज़ों में पाया जाता है। घड़ियाँ, सिलाई मशीनें, व्हीलचेयर, शॉपिंग ट्रॉली, ऑफ़िस की कुर्सियाँ, पंखे और फ़ैक्टरी की मशीनें - ये सभी पहियों या पहिए जैसी चीज़ों पर ही चलती हैं।

बच्चों के खिलौने से लेकर बड़े हवाई जहाज़ तक, आधुनिक जीवन में पहिए आज भी अहम भूमिका निभाते हैं।

सुश्री शिवानी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

स्मृतियों के झरोखे से

एक पुराना रेलवे स्टेशन, एक अनजान हमसफ़र और यादों का सफर

धुंध और ठहरा हुआ समय

सर्दियों की वह शाम आम दिनों से बिल्कुल अलग थी। उत्तर भारत के एक छोटे से, गुमनाम रेलवे स्टेशन 'नीमगाँव' पर घने कोहरे की चादर लिपटी हुई थी। इस स्टेशन पर गिने-चुने लोग ही उतरते थे, और रात के समय तो यहाँ सन्नाटा इस कदर पसर जाता था मानो वक्त खुद सुस्ताने के लिए बैठ गया हो। स्टेशन की पीली मद्धम लाइटें कोहरे को चीरने की नाकाम कोशिश कर रही थीं। प्लेटफॉर्म नंबर दो की एक पुरानी लोहे की बेंच पर अलोक अकेला बैठा था। हाथ में पकड़ी हुई चाय की प्याली से उठती भाप सीधे कोहरे में विलीन हो रही थी। आलोक, जो दिल्ली के एक बड़े पब्लिशिंग हाउस में काम करता था, अपने जीवन की उलझनों से दूर भागने के लिए इस अनजाने सफर पर निकला था। वह अपनी बोरियत और आंतरिक अकेलेपन से जूझ रहा था, जहाँ जिंदगी की रफ़्तार ने उसकी सारी खुशियाँ छीन ली थीं।

स्टेशन पर सन्नाटा इतना गहरा था कि दूर कहीं पटरी बदलने की आवाज भी साफ सुनाई दे रही थी। आलोक ने अपनी घड़ी देखी, ट्रेन दो घंटे लेट थी। उसने एक गहरी सांस ली और सोचने लगा कि कैसे आधुनिक तकनीक और स्मार्टफोन की दुनिया ने इंसानों से बातचीत का हुनर ही छीन लिया है। तभी अचानक, स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ से एक बुज़ुर्ग व्यक्ति लाठी टेकते हुए आए और बिना कुछ कहे आलोक की बेंच के दूसरे कोने पर बैठ गए। उन्होंने खादी का एक पुराना कुर्ता और गहरे कत्थई रंग का शॉल ओढ़ रखा था। उनके चेहरे की झुर्रियों में अनुभवों की एक पूरी किताब छिपी हुई थी। उन्होंने आलोक की तरफ देखा और एक बेहद आत्मीय मुस्कान बिखेरी, जिसने उस बर्फीली रात में भी एक अजीब सी गर्माहट का अहसास करा दिया।

उस बुज़ुर्ग ने जेब से पीतल की एक डिबिया निकाली, उसमें से इलायची दाना निकाला और आलोक की तरफ बढ़ाते हुए बोले, 'सफर में इंतजार जब लंबा हो जाए बेटा, तो वक्त को गिनना छोड़ देना चाहिए।' आलोक पहले तो थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन फिर उसने मुस्कुराकर इलायची दाना ले लिया। उस अजनबी बुज़ुर्ग की आवाज में एक ऐसा ठहराव और सम्मोहन था कि आलोक चाहकर भी अपनी रूखी आधुनिक औपचारिकता को बनाए नहीं रख सका। उसने बात शुरू करने के इरादे से पूछा, 'बाबा, आप इस सुनसान स्टेशन पर इस वक्त कहाँ जाने के लिए ट्रेन का इंतजार कर रहे हैं?' बुज़ुर्ग हँसे और बोले, 'मैं यहाँ किसी ट्रेन का इंतजार नहीं कर रहा हूँ। मैं तो यहाँ गुज़रते हुए वक्त को देखने आता हूँ। मेरा नाम दीनानाथ है।'

पुरानी चिट्ठियों की महक और अनकहे किस्से

दीनानाथ जी की बात ने आलोक के भीतर की उत्सुकता को जगा दिया। दीनानाथ जी राज्य सरकार के एक अत्यंत प्रतिष्ठित और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। एक लंबा दौर वह भी था जब उनके एक हस्ताक्षर पर सरकारी फाइलें बिजली की गति से आगे बढ़ती थीं, दफ्तर के प्रांगण में उनके कदम रखते ही कर्मचारियों

की कतारें लग जाती थीं, और पूरे जिले के सामाजिक और प्रशासनिक गलियारों में उनका रसूख सिर चढ़कर बोलता था। प्रशासनिक सेवा में रहते हुए उन्होंने नीति-निर्माण और जन कल्याण के अनेक ऐसे कार्य किए थे जिनकी मिसाल आज भी नए अधिकारी लेते थे। परंतु आज, उस प्रशासनिक हनक, सरकारी तामझाम और सामाजिक चकाचौंध से कोसों दूर, वे अपने जीवन के उत्तरार्ध में अकेलेपन के सबसे कड़े, नीरस और दर्दनाक इम्तिहान से गुज़र रहे थे। उनकी धुंधली पड़ चुकी आँखें हमेशा स्टेशन पर टिकी रहती थीं, मानो वे किसी ऐसे परिचित चेहरे की तलाश में हों जो कभी आने वाला नहीं था। उनके चेहरे की झुर्रियों में केवल उम्र का तकाज़ा नहीं था, बल्कि उनमें छिपा था एक गहरा और मौन संताप जो अपनों की बेरुखी से पैदा हुआ था।

दीनानाथ जी और आलोक की बातों का सिलसिला शुरू हुआ, तो कोहरा जैसे धीरे-धीरे छटने लगा। दीनानाथ जी ने बताया कि वे इसी नीमगाँव के एकमात्र पोस्टमास्टर हुआ करते थे, जो अब सेवा-निवृत्त हो चुके थे। उन्होंने वह दौर देखा था जब इस छोटे से रेलवे स्टेशन पर पूरा गाँव सिर्फ एक चिट्ठी के इंतजार में उमड़ पड़ता था। उन्होंने कहा, 'बेटा, आज के इस दौर में तुम लोग एक सेकंड में हजारों मील दूर संदेश भेज देते हो, लेकिन क्या उस संदेश में वह तड़प, वह धीरज और वह आत्मीयता होती है जो एक कागज़ के टुकड़े पर स्याही से लिखी इबारत में होती थी?'

आलोक चुपचाप सुनता रहा। दीनानाथ जी ने अपने शॉल के भीतर से चमड़े का एक पुराना थैला निकाला और उसमें से कुछ पीले पड़ चुके लिफाफे बाहर निकाले। उन्होंने एक लिफाफा आलोक के हाथ में देते हुए कहा, 'इसे देखो, यह पैंतीस साल पुरानी एक अधूरी प्रेम कहानी का गवाह है। एक सैनिक ने अपनी पत्नी को सीमा से लिखा था, लेकिन तकनीकी खराबी और पते के मिट जाने के कारण यह चिट्ठी कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच सकी। मैंने सालों तक उस सैनिक के परिवार को ढूंढा, और जब मिला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लेकिन इस कागज़ में आज भी उस सैनिक के हाथों की छुअन और उसकी सांसों की महक जिंदा है।' आलोक ने जब उस कागज़ को छुआ, तो उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसे महसूस हुआ कि शब्द केवल संदेश नहीं होते, वे इंसान की आत्मा का हिस्सा होते हैं।

दीनानाथ जी ने कई ऐसे किस्से सुनाए, जिन्होंने आलोक को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने बताया कि कैसे एक माँ अपने बेटे के मनीऑर्डर का इंतजार सिर्फ पैसों के लिए नहीं, बल्कि इस बात की तसल्ली के लिए करती थी कि उसका बेटा दूर शहर में सुरक्षित है। बातचीत के इस सिलसिले में दो घंटे कब बीत गए, पता ही नहीं चला। आलोक को लगा कि वह किसी जादुई समय-यात्रा पर निकल आया है, जहाँ गति का कोई मोल नहीं था, बल्कि ठहराव ही सर्वोपरि था। वह अपने जीवन के उन तमाम लम्हों को याद करने लगा जिन्हें उसने काम की व्यस्तता के कारण बिना जिए ही गँवा दिया था। उसने अपनी माँ को फोन किए हुए हफ़्तों बिता दिए थे, और दोस्तों से मिले तो जैसे सदियाँ गुज़र गई थीं।

जीवन का नया व्याकरण और विदाई

अचानक दूर से एक तेज हेडलाइट कोहरे को चीरती हुई दिखाई दी और स्टेशन के लाउडस्पीकर पर ट्रेन के आगमन की घोषणा गूँज उठी। आलोक की ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर रुक गई। गाड़ी के डिब्बों से आती रोशनी ने पूरे प्लेटफॉर्म को जगमगा दिया। आलोक का सफर अब आगे बढ़ने वाला था, लेकिन उसका मन अब भारी हो चुका था। वह उस जादुई दुनिया को छोड़कर नहीं जाना चाहता था जो उसने पिछले दो घंटों में जी ली थी। उसने अपना बैग उठाया और दीनानाथ जी के पैर छूने के लिए नीचे झुका।

दीनानाथ जी ने उसके सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद देते हुए कहा, 'जीते रहो बेटा। याद रखना, जिंदगी की गाड़ी में चाहे जितनी भी रफ़्तार हो, लेकिन कभी-कभी किसी छोटे से गुमनाम स्टेशन पर उतरकर खुद से बात करना मत भूलना। असली सफर वह नहीं है जो पटरी पर चलता है, असली सफर तो वह है जो तुम्हारे भीतर चलता है।' आलोक

ट्रेन के डिब्बे में चढ़ा और खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गया। ट्रेन ने एक लंबा हॉर्न दिया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

आलोक ने खिड़की से बाहर झांककर देखा, कोहरा फिर से गहरा हो रहा था। दीनानाथ जी उसी बेंच पर अकेले बैठे थे और मुस्कुराते हुए अपना हाथ हिला रहे थे। धीरे-धीरे वे और वह छोटा सा स्टेशन कोहरे में पूरी तरह ओझल हो गए। आलोक ने अपनी सीट पर पीछे की ओर सिर टिकाया और एक गहरी, सुकून भरी सांस ली। उसके हाथ में अब कोई स्मार्टफोन नहीं था, बल्कि उसके दिमाग में दीनानाथ जी के कहे शब्द और कहानियों का ताना-बाना बुन रहा था। उसने तय किया कि दिल्ली पहुँचते ही वह सबसे पहले अपनी माँ को एक लंबी चिट्ठी लिखेगा—ईमेल या मैसेज नहीं, बल्कि अपने हाथों से कागज़ पर स्याही बिखेरकर। ट्रेन अपनी गति पकड़ चुकी थी, लेकिन आलोक के भीतर का सन्नाटा अब एक खूबसूरत संगीत में बदल चुका था। वह समझ गया था कि वक्त की सबसे खूबसूरत मरम्मत खुद को समय देने से ही होती है।

श्रीमती अंबिका दीपक
पत्नी दीपक के.वी., सहायक पर्यवेक्षक

स्वस्थ खान-पान की आदतें

हम जो भोजन करते हैं, वही हमारे शरीर को ऊर्जा देता है और हमें दिनभर काम करने की शक्ति देता है। अच्छा भोजन केवल पेट भरने के लिए नहीं होता, बल्कि यह हमारे शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने का काम करता है। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में लोग जल्दी-जल्दी कुछ भी खा लेते हैं। इससे समय तो बच जाता है, लेकिन शरीर को आवश्यक पोषण नहीं मिल पाता। इसलिए स्वस्थ खान-पान की आदतें अपनाना बहुत आवश्यक है।

बच्चों को शारीरिक और मानसिक विकास के लिए पौष्टिक भोजन चाहिए। युवाओं और कामकाजी लोगों को दिनभर सक्रिय रहने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। बुज़ुर्गों के लिए हल्का, सुपाच्य और पौष्टिक भोजन सबसे अच्छा माना जाता है। अच्छी खान-पान की आदतें हर उम्र में लाभ पहुँचाती हैं।

स्वस्थ भोजन क्या है?

स्वस्थ भोजन वह है जिसमें शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में हों। हमारे भोजन में अनाज, दालें, हरी सब्जियाँ, मौसमी फल, दूध या दही तथा थोड़ी मात्रा में स्वस्थ वसा का होना आवश्यक है। हर दिन एक जैसा भोजन करने के बजाय अलग-अलग प्रकार के खाद्य पदार्थों को भोजन में शामिल करना बेहतर होता है।

स्वस्थ रहने के लिए बहुत बड़े बदलाव करने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ छोटी-छोटी आदतें ही बड़ा अंतर ला सकती हैं।

- सुबह का नाश्ता कभी न छोड़ें।
- दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पिएँ।
- भोजन समय पर करें।
- रोज़ हरी सब्जियाँ और मौसमी फल खाएँ।
- घर का बना ताज़ा भोजन अधिक खाएँ।
- भोजन आराम से और अच्छी तरह चबाकर करें।

इन आदतों से पाचन अच्छा रहता है और शरीर को पूरा पोषण मिलता है।

कभी-कभी मनपसंद भोजन खाना गलत नहीं है, लेकिन इसे रोज़ की आदत नहीं बनाना चाहिए। बहुत अधिक तेल, नमक और चीनी वाले खाद्य पदार्थ कम मात्रा में खाने चाहिए। तले हुए खाद्य पदार्थ, पैकेट वाले स्नैक्स और शीतल पेयों का अधिक सेवन धीरे-धीरे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है।

आज अधिकांश लोग कई घंटे कार्यालय में काम करते हैं। ऐसे में घर से बना भोजन साथ ले जाना एक अच्छी आदत है। बीच-बीच में पर्याप्त पानी पीना, भूख लगने पर फल या भुने हुए चने खाना तथा बार-बार चाय, कॉफी या मीठे पेय लेने से बचना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इससे पूरे दिन शरीर में ऊर्जा बनी रहती है और काम करने में भी उत्साह बना रहता है।

स्वस्थ खान-पान कोई कठिन नियम नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक अच्छा तरीका है। यदि हम प्रतिदिन संतुलित, ताज़ा और पौष्टिक भोजन चुनें, तो हम अनेक बीमारियों से बच सकते हैं और अधिक प्रसन्न तथा सक्रिय जीवन जी सकते हैं। याद रखिए, स्वस्थ शरीर ही हमारे सुखी और सफल जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।

श्री अविनाश नाथ

लेखापरीक्षक

वर्कला की लहरें और जिंदगी का फलसफा

यह कहानी है चार दोस्तों की;आदित्य, कबीर, रिया और मीरा। कॉलेज खत्म होने के बाद जिंदगी की आपाधापी में चारों ऐसे उलझे कि मिलना तो दूर, ठीक से बात करना भी मुश्किल हो गया था। जब जिंदगी का तनाव बर्दाश्त से बाहर होने लगा, तो चारों ने सब कुछ छोड़कर कुछ दिनों के लिए वर्कला जाने का फैसला किया। केरल का एक छोटा सा तटीय शहर, जो अपने ऊंचे लाल चट्टानों और अरब सागर के नीले पानी के लिए जाना जाता है।

लेकिन इस ट्रिप पर भी, चारों अपने साथ सामान से ज्यादा अपनी समस्याओं का भारी बोझ लेकर आए थे। चार दोस्त, चार कहानियां, आदित्य: एक कॉर्पोरेट कंपनी में काम करता था। दिन में 14 घंटे काम करने के बाद भी उसे हमेशा नौकरी जाने का डर सताता रहता था। चिंता उसकी परछाई बन चुकी थी। कबीर: अपने स्टार्टअप के असफल होने के सदमे से जूझ रहा था। उसे लगता था कि उसका करियर खत्म हो चुका है और वह एक पराजित व्यक्ति बन चुका है। रिया: एक गंभीर ब्रेकअप के दौर से गुजर रही थी। तीन साल का रिश्ता अचानक टूट जाने से उसका इंसानों और प्यार पर से भरोसा उठ गया था। मीरा: अपने परिवार की उम्मीदों और अपने सपनों के बीच फंसी थी। वह लेखिका बनना चाहती थी, लेकिन समाज और परिवार के दबाव में एक बेमन की नौकरी कर रही थी।

जब वे वर्कला पहुंचे, तो वहां की ठंडी हवा और समंदर की आवाज ने उन्हें थोड़ी शांति तो दी, लेकिन उनके दिमाग का शोर अब भी शांत नहीं हुआ था। वे वर्कला की चट्टानों पर स्थित एक कैफे में बैठे थे, लेकिन आपस में बात करने के बजाय हर कोई अपने-अपने ख्यालों में डूबा हुआ था। तभी कैफे में एक शख्स दाखिल हुआ। करीब 45-50 साल की उम्र, सफेद होती दाढ़ी, चहरे पर एक बेफिक्र सी मुस्कान, और आंखों में एक अजीब सी चमक। उसका नाम सैम था। सैम उसी कैफे का मालिक था। वह हर टेबल पर जाकर लोगों से बेहद गर्मजोशी से मिल रहा था, जैसे सब उसके पुराने दोस्त हों।जब वह इन चारों की टेबल पर आया, तो उसने भांप लिया कि इन युवाओं के कंधों पर कोई अदृश्य बोझ है।सैम ने मुस्कुराते हुए कहा, "केरल की कॉफी और वर्कला का सूर्यास्त, दोनों का मजा तब तक नहीं लिया जा सकता, जब तक दिमाग में कल की चिंता भरी हो। क्या बात है दोस्तों? इतने शांत क्यों हो?" पहले तो चारों हिचकिचाए, लेकिन सैम की जादुई और आत्मीय शख्सियत ऐसी थी कि धीरे-धीरे सबने अपने दिल के द्वार खोल दिए। कबीर ने अपने डूबते स्टार्टअप का दर्द बयां किया, आदित्य ने अपनी नौकरी का डर बताया, रिया के आंसू उसके ब्रेकअप के दर्द के साथ बह निकले, और मीरा ने अपनी घुटन बयां कर दी।

सैम ने सबकी बातें बहुत ध्यान से सुनीं। फिर उसने खिड़की से बाहर दिख रहे विशाल अरब सागर की तरफ इशारा किया, जहां लहरें आ रही थीं और चट्टानों से टकराकर वापस लौट रही थीं। सैम ने हंसते हुए कहा, "तुम लोग इस समंदर को देख रहे हो? करोड़ों सालों से ये लहरें आ रही हैं, इस चट्टान से टकराती हैं, और फिर शांत हो जाती हैं। कोई भी लहर हमेशा के लिए नहीं ठहरती।" उसने कबीर की तरफ देखा, "कबीर, तुम्हारा स्टार्टअप डूब गया। बुरा

लगा, सही है। लेकिन क्या पांच साल बाद जब तुम पीछे मुड़कर देखोगे, तो ये हार तुम्हें उतनी ही बड़ी लगेगी? नहीं। यह सिर्फ एक अनुभव होगा।"फिर उसने आदित्य और मीरा से कहा, "नौकरी छूटना या समाज का डर... ये सब आज बहुत बड़े दानव लग रहे हैं। पर सच तो यह है कि समय के इस विशाल चक्र में हमारी हैसियत एक रेत के कण जैसी भी नहीं है। जब हम बूढ़े होकर बिस्तर पर लेटे होंगे, तब हम यह सोचकर नहीं रोएंगे कि बॉस ने क्या कहा था, बल्कि यह सोचकर पछताएंगे कि हम जिए क्यों नहीं।" सैम ने रिया का हाथ थामते हुए कहा, "दिल टूटा है, दर्द होगा। लेकिन यह दर्द भी स्थायी नहीं है। यह ब्रह्मांड बदलाव का नियम मानता है। आज जो रोना है, कल वही तुम्हारी ताकत बनेगा।"

सैम की बातें सीधे उनके दिलों में उतर रही थीं। सैम ने अपनी जिंदगी का एक पन्ना खोला, "दस साल पहले, मेरी एक बहुत बड़ी आईटी कंपनी थी। मैं दिन-रात पैसों के पीछे भागता था। फिर एक दिन एक हादसे में मैंने अपनी पत्नी को खो दिया। उस दिन मुझे समझ आया कि हम जिन चीजों के लिए रात-दिन मरते हैं, वे कितनी अस्थायी हैं। मैंने सब कुछ छोड़ दिया और यहाँ आ गया। आज मैं इस कैफे में लोगों को खुश देखकर खुश होता हूँ।"उसने चारों दोस्तों के कंधों पर हाथ रखा और कहा, "याद रखो दोस्तों, नथिंग इज परमानेंट। इस दुनिया में कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहने वाला, न ये सुख, न ये दुख। लंबे समय में, हमारी हर वो समस्या जिसके लिए हम आज अपनी रातें काली कर रहे हैं, अंत में बहुत छोटी और नासमझ लगने लगती है। इसलिए, बहुत ज्यादा तनाव मत लो। बस आज में जियो, और अपना सर्वश्रेष्ठ करो। परिणाम जो भी हो, उसे स्वीकार करना सीखो।"

सैम की इस बात ने चारों दोस्तों के सोचने का नजरिया पूरी तरह बदल दिया। जैसे उनके दिलों से कोई बहुत भारी पत्थर हट गया हो। अगली सुबह, जब वे ब्लैक बीच पर टहल रहे थे, तो नजारा बदला हुआ था। आदित्य अब फोन नहीं देख रहा था, वह लहरों का आनंद ले रहा था। कबीर के चेहरे पर हार का डर नहीं, बल्कि कुछ नया शुरू करने का उत्साह था। रिया ने समंदर की हवा में गहरी सांस ली और बिखरे हुए अतीत को पीछे छोड़ दिया। और मीरा ने अपनी डायरी निकाली और वर्कला की लहरों पर अपनी पहली कविता लिखनी शुरू कर दी। उन्होंने जान लिया था कि समस्याएं तो आती-जाती रहेंगी, लेकिन जिंदगी जीने का यह पल दोबारा नहीं आएगा। वर्कला की उन लहरों ने उन्हें सिखा दिया था कि जिंदगी को मुट्ठी में भींचना नहीं, बल्कि उसे बहने देना ही असली जीना है।

श्री आदिशंकर एस
पुत्र सुश्री संध्या पी वी एस, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर की यात्रा

ऐसे बहुत कम पर्यटक हैं जो नहीं जानते कि तिरुवनंतपुरम में एक प्रसिद्ध चिड़ियाघर है। तिरुवनंतपुरम की यात्रा करने वालों को यह चिड़ियाघर अवश्य देखना चाहिए। चिड़ियाघर घूमने के दौरान आप पास के संग्रहालय और आर्ट गैलरी भी देख सकते हैं। यहां कुछ चीजें हैं जो एक यात्री को तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर, संग्रहालय और आर्ट गैलरी के बारे में जाननी चाहिए।

तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर भारत के सबसे पुराने चिड़ियाघरों में से एक है। तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर 1857 में बनाया गया था। पचपन एकड़ में फैले इस चिड़ियाघर को त्रावणकोर के शासक स्वाति थिरुनल राम वर्मा ने बनवाया था। यह चिड़ियाघर आम चिड़ियाघर की तरह नहीं है। दरअसल यह चिड़ियाघर तिरुवनंतपुरम बॉटनिकल गार्डन का एक हिस्सा है।

तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर में जानवरों की 82 प्रजातियाँ हैं। चिड़ियाघर की स्वदेशी प्रजातियों में शेर-पूंछ वाला मकाक, नीलगिरि लंगूर, भारतीय गैंडा, एशियाई शेर, बंगाल टाइगर, सफेद बाघ, तेंदुआ और एशियाई हाथी शामिल हैं। शेर और बाघ चिड़ियाघर के मुख्य आकर्षण हैं। जानवरों की प्रदर्शनियों के अलावा, चिड़ियाघर में एक तितली पार्क और एक साँप संग्रहालय भी है। यहां एनाकोंडा समेत विभिन्न प्रजातियों के सांप रखे गए हैं। पास में ही सजावटी मछली प्रदर्शनी और इतिहास संग्रहालय है।

चिड़ियाघर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक जानवर अपने प्राकृतिक वातावरण में संरक्षित रहता है। यहां जानवरों को पिंजरे में रखने की कोई प्रथा नहीं है, क्योंकि उन्हें आवास में रखा जाता है, यहां तक कि तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर में विदेशी जानवरों को भी पाला जाता है। अधिकांश आगंतुक बच्चे हैं और जब मैं चिड़ियाघर गया तो वहाँ काफी व्यस्तता थी क्योंकि छुट्टी का दिन था। चिड़ियाघर घूमने का सबसे अच्छा समय सितंबर से मई तक है। सोमवार को चिड़ियाघर घूमने न जाएँ क्योंकि उस दिन यहाँ छुट्टी होती है। इसलिए शनिवार और रविवार को साहसी बनें। प्रवेश का समय सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक है।

आप बहुत कम पैसे खर्च करके तिरुवनंतपुरम में चिड़ियाघर का दौरा कर सकते हैं। चिड़ियाघर देखने के लिए एक व्यक्ति से 10 रुपये शुल्क लिया जाता है। अगर आप फोटो खींच रहे हैं तो आपको 25 रुपये ज्यादा चुकाने होंगे। इस चिड़ियाघर में एक या दो घंटे बिताने लायक हैं।

इसलिए चिड़ियाघर का दौरा करने के बाद पर्यटक घूमने लायक कुछ जगहों के बारे में जान सकते हैं।नेपियर संग्रहालय 1855 में शुरू हुआ और 1880 में पूरा हुआ। संग्रहालय का नाम लॉर्ड नेपियर के नाम पर रखा गया है जो मद्रास के गवर्नर थे। रॉबर्ट किश्चेलमंड को नेपियर संग्रहालय के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। नेपियर संग्रहालय को प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के नाम से भी जाना जाता है। नेपियर संग्रहालय अंग्रेजी, मुगल और चीनी वास्तुकला के साथ-साथ केरल शैली में बनाया गया है। नेपियर संग्रहालय अंग्रेजी, मुगल और चीनी वास्तुकला के साथ-साथ केरल शैली में बनाया गया है।

श्रीचित्रा आर्ट गैलरी नेपियर संग्रहालय के बगल में स्थित है। श्रीचित्रा आर्ट गैलरी केरल के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा के चित्रों के प्रभावशाली संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। यहां कई राजपूत, राजस्थानी और मुगल शैली की पेंटिंग भी हैं।

संग्रहालय से पांच सौ मीटर की दूरी पर स्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र को भी इस यात्रा के भाग के रूप में देखा जा सकता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय को शिक्षण एवं मनोरंजन का केन्द्र भी कहा जा सकता है। तिरुवनंतपुरम आने वाले छात्रों के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय सबसे बड़ा आकर्षण है। एक खूबसूरत तारामंडल भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय का हिस्सा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय में प्रवेश के लिए बहुत सीमित शुल्क है।

मुझे यकीन है कि यह यात्रा आपको परंपरा और ज्ञान का एक शानदार अनुभव देगी। प्लास्टिक और अन्य पर्यावरण के लिए हानिकारक चीजों से बचें और जल्द ही यात्रा के लिए तैयार हो जाएं।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली

जांच-बिंदु

कार्य की मद	जांच-बिंदु
1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3)* के अंतर्गत जारी किए जाने वाले सामान्य आदेश** तथा अन्य कागज आदि अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी करना	**ऐसे कागजात पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी**
2. “क” तथा “ख” *** क्षेत्रों की राज्य सरकारों, केंद्रीय सरकार के कार्यालयों आदि को पत्र हिंदी में भेजना	**i. संबंधित अनुभाग / अधिकारी जो इन पर हस्ताक्षर करते हैं ।** **निर्धारित लक्ष्य: 100 प्रतिशत** **ii. प्रेषण अनुभाग:** ऐसे पत्रों को तभी स्वीकार किया जाए जब वे हिंदी में हो या उनका हिंदी अनुवाद साथ हो ।
3. हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना	**संबंधित अधिकारी / अनुभाग**
4. रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, सूचनापट्ट आदि द्विभाषी रूप में बनाना	**संबंधित अधिकारी / अनुभाग:** राजभाषा नियम 11 में उल्लिखित वस्तुएं द्विभाषी रूप में ही तैयार करवाएं ।
5. **सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां**	**अनुभाग के प्रभारी अधिकारी** क्षेत्र 'ग' में ऐसी प्रविष्टियाँ यथासंभव हिंदी में की जानी चाहिए

***राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी दस्तावेज़:** सामान्य आदेश, अधिसूचनाएँ, प्रेस विज्ञप्तियाँ/विज्ञप्ति, अनुबंध, समझौते, लाइसेंस, परमिट, निविदा सूचना प्रपत्र, संकल्प, नियम, सूचना, संसद के दोनों सदनों में से किसी एक या दोनों के समक्ष रखे गए आधिकारिक दस्तावेज (रिपोर्टों के अलावा), उच्च अधिकारियों को भेजी गई प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें और मुख्यालय कार्यालय तथा अन्य केंद्रीय सरकारी कार्यालयों को भेजी गई प्रतियाँ/रिपोर्टें।

सामान्य आदेश:** स्थायी प्रकार के सभी आदेश, निर्णय, अनुदेश परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हो तथा ऐसे सभी आदेश, अनुभागीय आदेश, मंजूरी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, परिपत्र आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में या उनके लिए हो, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन सामान्य आदेश कहलाते हैं ।

*** "क" क्षेत्र के बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश और अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली के साथ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है,

"**ख**" क्षेत्र से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है ।

चित्रकार- श्री जे ए साई कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रचयिता- श्री नरेन्द्रन एस पुत्र सुश्री संजा सी चंद्रन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम